About the Book

यह किताब उत्तर प्रदेश अधीनस्थ सेवा चयन आयोग (UPSSSC) द्वारा आयोजित उत्तर प्रदेश लेखपाल मुख्य परीक्षा की तैयारी करने वाले अभ्यर्थियों के लिए विशेष रूप से तैयार की गई है। यह एक सिलेबस-आधारित गाइड बुक है, जिसे लेखपाल मुख्य परीक्षा के नवीनतम पाठ्यक्रम, संशोधित परीक्षा पैटर्न और 16 दिसंबर, 2025 को आयोजित परीक्षा को ध्यान में रखकर डिजाइन किया गया है। यह पुस्तक उम्मीदवारों को संपूर्ण सिलेबस की स्पष्ट समझ, मजबूत वैचारिक आधार और परीक्षा-उपयोगी कंटेंट प्रदान करती है।

किताब की मुख्य विशेषताएँ –

- यह किताब UP लेखपाल मुख्य परीक्षा को पूरी तरह कवर करती है।
- इसमें नवीनतम सिलेबस के अनुसार संपूर्ण थ्योरी को सरल, स्पष्ट और परीक्षा-उन्मुख भाषा में प्रस्तुत किया गया है, ताकि हर स्तर के अभ्यर्थी आसानी से समझ सकें।
- कंटेंट को अपडेटेड आँकड़ों, तथ्यों और वर्तमान जरूरतों के अनुसार तैयार किया गया है, जिससे तैयारी पूरी तरह प्रासंगिक और भरोसेमंद बनी रहती है।
- सभी टॉपिक्स को अध्यायवार और व्यवस्थित ढंग से प्रस्तुत किया गया है, जिससे पढ़ना, समझना और रिवीजन करना आसान हो जाता है।
- प्रत्येक अध्याय में परीक्षा में पूछे जाने योग्य महत्वपूर्ण बिंदुओं पर विशेष फोकस किया गया है, ताकि अभ्यर्थी अनावश्यक कंटेंट में समय न गंवाएँ।
- यह गाइड बुक कॉन्सेप्ट क्लियर करने, गलतियों को कम करने और आत्मविश्वास बढ़ाने में सहायक है।
- नियमित अध्ययन से अभ्यर्थियों की परीक्षा के ट्रेंड, महत्वपूर्ण टॉपिक्स और स्कोरिंग एरिया की बेहतर समझ विकसित होती है।

UP लेखपाल मुख्य परीक्षा की तैयारी करने वाले उम्मीदवारों के लिए यह एक भरोसेमंद, 100% अपडेटेड, सिलेबस-कवर्ड और परिणाम-केंद्रित Guide Book है, जो सफलता की दिशा में मजबूती से आगे बढ़ने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

अन्य महत्वपूर्ण पुस्तकें

Buy books at great discounts on: www.examcart.in | www.amazon.in/examcart |

AGRAWAL EXAMCART
Paper Pakka Fasega!
CB2238

उत्तर प्रदेश लेखपाल
मुख्य परीक्षा स्टडी बुक
ISBN - 978-93-7516-777-8
₹ 399

उत्तर प्रदेश लेखपाल मुख्य परीक्षा स्टडी बुक

CB2238 AGRAWAL EXAMCART

उत्तर प्रदेश अधीनस्थ सेवा चयन आयोग द्वारा आयोजित

उत्तर प्रदेश लेखपाल

मुख्य परीक्षा

स्टडी बुक

16 December, 2025 के परीक्षा पैटर्न अनुसार

भाग	विषय	प्रश्नों की संख्या/ कुल अंक	समयावधि/ योग
भाग-I	सामान्य अध्ययन	30/30	2 घंटे (120 मिनट) — 100 प्रश्न/अंक
	ग्राम्य समाज एवं विकास	5/5	
	पर्यावरण पारिस्थितिकी एवं आपदा प्रबंधन	10/10	
	डाटा इंटरप्रिटेशन	10/10	
	सामान्य हिंदी	10/10	
भाग-II	कम्प्यूटर एवं सूचना प्रौद्योगिकी की अवधारणाएँ एवं इस क्षेत्र में समसामयिक प्रौद्योगिकी विकास एवं नवाचार का ज्ञान	15/15	
भाग-III	उत्तर प्रदेश राज्य से सम्बंधित सामान्य जानकारी	20/20	

मुख्य विशेषताएँ

- सभी विषयों पर नए पाठ्यक्रमानुसार थ्योरी
- नवीनतम आँकड़ों और डाटा का समावेश
- 800+ महत्वपूर्ण अध्यायवार प्रश्न

Code	Price	Pages	ISBN
CB2238	₹399	456	978-93-7516-777-8

विषय सूची

➔ **परीक्षा से सम्बन्धित महत्वपूर्ण सूचना (Important Information)** **vi**
(उत्तर प्रदेश लेखपाल भर्ती परीक्षा की सम्पूर्ण जानकारी एवं पुस्तक या किसी भी समस्या के लिए हमारा Helpline No.)

➔ पाठ्यक्रम एवं परीक्षा पैटर्न **vii**

विषयगत ज्ञान

भाग	इकाई	अध्याय क्र.	अध्याय का नाम (सम्पूर्ण थ्योरी)	अभ्यास प्रश्न	पृष्ठ संख्या
भाग-I	**इकाई-1**	**1.**	प्राचीन भारत का इतिहास	**20**	**1-14**
		2.	मध्यकालीन भारत का इतिहास	**20**	**15-28**
		3.	आधुनिक भारत का इतिहास	**20**	**29-50**
	इकाई-2	**1.**	भारतीय संविधान	**20**	**51-77**
	इकाई-3	**1.**	भारत का भूगोल	**20**	**78-99**
		2.	विश्व का भूगोल	**20**	**100-124**
	इकाई-4	**1.**	भारतीय अर्थव्यवस्था	**30**	**125-147**
	इकाई-5	**1.**	ग्राम्य समाज एवं विकास	**60**	**148-228**
	इकाई-6	**1.**	स्टैटिक जी.के.	**25**	**229-251**
	इकाई-7	**2.**	विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी	**18**	**252-279**
	इकाई-8	**1.**	पर्यावरण	**16**	**280-292**
	इकाई-9	**1.**	डाटा इंटरप्रिटेशन	**63**	**293-304**
	इकाई-10		**सामान्य हिंदी :** **1.** वर्ण एवं ध्वनि विचार: उच्चारण, लेखन, स्वर, व्यंजन, मात्रा–पहचान और प्रयोग एवं ध्वनियों का वर्गीकरण **2.** संधि एवं संधि–विच्छेद **3.** समास **4.** उपसर्ग एवं प्रत्यय **5.** शब्द शुद्धि/वर्तनी **6.** **शब्द प्रकार:** (क) तत्सम, अर्द्धतत्सम, तद्भव, देशज, विदेशी (ख) संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया, अव्यय (क्रिया–विशेषण, संबंधसूचक, समुच्चयबोधक, विस्मयबोधक एवं निपात) **7.** व्याकरणिक कोटियाँ: परसर्ग (कारक), लिंग, वचन, काल, वृत्ति, पक्ष एवं वाच्य **8.** वाक्य रचना एवं वाक्य शुद्धि	**432**	**305-366**

भाग	इकाई	अध्याय क्र.	अध्याय का नाम (सम्पूर्ण थ्योरी)	अभ्यास प्रश्न	पृष्ठ संख्या
			9. विराम चिह्नों का प्रयोग **10.** रिक्त स्थानों की पूर्ति **11.** अनेकार्थक शब्द **12. शब्द ज्ञान :** (क) पर्यायवाची (ख) विलोम (ग) शब्द–युग्मों का अर्थ भेद (समश्रुत भिन्नार्थक शब्द) (घ) वाक्यांश के लिए सार्थक शब्द (ङ) समानार्थी शब्द एवं संबंधवाची शब्दावली **13. पत्र एवं प्रारूप लेखन :** वैयक्तिक शासकीय, अर्द्धशासकीय एवं व्यावसायिक समस्याओं के निराकरण हेतु सम्बंधित को सम्बोधित पत्र, कार्यालय आदेश, अधिसूचना और परिपत्र सम्बन्धी पत्र **14.** मुहावरे एवं लोकोक्तियाँ		
भाग-II		**1.**	कम्प्यूटर	**18**	**367-400**
भाग-III		**1.**	उत्तर प्रदेश : सामान्य जागरूकता	**26**	**401-448**
				प्रश्न संख्या : 808	

अतिरिक्त अध्ययन सामग्री ई-बुक
(Extra Study Material E-Book)

Extra Study Material ई-बुक का Content

- 3 सॉल्व्ड पेपर्स की ई-बुक
- डिस्काउंट कूपन दिया गया है। उसका उपयोग करें और 'www.examcart.in' से हमारी किताबें सबसे अच्छे डिस्काउंट पर खरीदें।

नोट : Link Expire होने से पहले दिए गए **QR Code** को स्कैन करके आप यह **Extra Study Material E-Book** को **Download** कर लें।

ऐसी पुस्तकें जो कोई आपको बताना नहीं चाहता!

इन अनोखी पुस्तकों ने कई छात्रों को उनके पहले प्रयास में ही परीक्षा पास करने में मदद की है और हम जो कहते हैं, उसे साबित भी करते हैं—इसीलिए हर पुस्तक के कुछ सैंपल चैप्टर दिए गए हैं। हम गारंटी देते हैं कि इन्हें पढ़ने के बाद आपको समझ आएगा कि ये पुस्तकें क्यों सबसे बेहतरीन हैं और क्यों इतने सारे छात्र इनसे सफल हुए हैं।

नोट

पढ़ने के लिए, किसी भी पुस्तक के पास दिए गए **QR Code** को स्कैन करें, उसके वेबसाइट पेज पर **"View PDF"** पर क्लिक करें। अगर पुस्तक पसंद आए, तो **Extra Study Material** ई-बुक में दिया गया डिस्काउंट कूपन इस्तेमाल करें और बेहतरीन डिस्काउंट भी पाएँ!

उत्तर प्रदेश लेखपाल हिंदी (Text Book)

उत्तर प्रदेश लेखपाल कंप्यूटर (Question Bank)

उत्तर प्रदेश लेखपाल (Practice Sets)

इकाई : 1

अध्याय 1 प्राचीन भारत का इतिहास

सिंधु घाटी सभ्यता

- सिंधु घाटी (हड़प्पा) सभ्यता भारत में शहरीकरण के पहले चरण का प्रतिनिधित्व करती है। यह सभ्यता 'कांस्य युग' की थी। यह सभ्यता भारत और पाकिस्तान में 1.5 मिलियन वर्ग किलोमीटर से अधिक क्षेत्र में फैली हुई है। पश्चिम में पाकिस्तान–ईरान सीमा शोर्तुगई (अफगानिस्तान) उत्तर में आलमगीरपुर (भारत में उत्तर प्रदेश) पूर्व में और दक्षिण में दैमाबाद (भारत में महाराष्ट्र) वे सीमाएँ हैं जिनके साथ हड़प्पा संस्कृति का विस्तार रहा है। इसकी अधिक संघनन गुजरात, पाकिस्तान, राजस्थान और हरियाणा के क्षेत्रों में पाया जाता है।
- हड़प्पा के खंडहरों का वर्णन सबसे पहले ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी के सैनिक और खोजकर्ता चार्ल्स मैसन ने अपनी पुस्तक में किया था। उन्होंने उत्तर–पश्चिम सीमांत प्रांत में इस शहर की खोज की जो अब पाकिस्तान में है।
- हड़प्पा, उपमहाद्वीप के सबसे पुराने शहरों में से एक और सिंधु नदी के तट पर, खोजा जाने वाला पहला शहर था। सिंधु नदी के तट पर फलने–फूलने के कारण इसे ''सिंधु घाटी सभ्यता" का नाम दिया गया ।
- हड़प्पा संस्कृति को विभिन्न चरणों अर्थात प्रारंभिक हड़प्पा (3000–2600 ईसा पूर्व), परिपक्व हड़प्पा (2600–1900 ईसा पूर्व) और उत्तर हड़प्पा (1900–1700 ईसा पूर्व) में विभाजित किया गया है।
- हड़प्पा की सिंधु घाटी साइट पहली बार 1826 सीई में चार्ल्स मेसन और 1831 में अलेक्जेंडर बर्न्स द्वारा अमरी में देखी गई थी। भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (एएसआई) के पहले सर्वेक्षक अलेक्जेंडर कनिंघम ने 1853, 1856 और 1875 में इस साइट का दौरा किया था।
- 1924 में एएसआई के महानिदेशक सर जॉन मार्शल ने हड़प्पा और मोहनजोदड़ो (खुदाई की जाने वाली पहली साइट) के बीच कई सामान्य विशेषताएं पाईं। उन्होंने निष्कर्ष निकाला कि वे एक बड़ी सभ्यता का हिस्सा थे। मोहनजोदड़ो के पुरातात्विक स्थल को 1980 में यूनेस्को द्वारा विश्व धरोहर स्थल घोषित किया गया था।
- **सिंधु सभ्यता की समय अवधि**
  - **भौगोलिक सीमा:** दक्षिण एशिया
  - **अवधि:** कांस्य युग
  - **समय:** 3300 से 1900 ईसा पूर्व (रेडियोकार्बन डेटिंग पद्धति का उपयोग करके निर्धारित)
  - **क्षेत्र:** 13 लाख वर्ग किमी
  - **शहर:** 6 बड़े शहर
  - **गांव:** 200 से अधिक
- **हड़प्पा सभ्यता के महत्वपूर्ण स्थल**
  - **हड़प्पा** रावी के तट पर पंजाब के साहीवाल जिले में स्थित है। 1921 में इसकी खुदाई की गई थी।
  - **मोहनजोदड़ो सिंध के** लरकाना जिले में सिन्धु नदी के तट पर स्थित है। 1922 में इसकी खुदाई की गई थी। यह इस सभ्यता का सबसे बड़ा स्थल है।
  - **अमरी** सिंधु नदी के तट पर, बलूचिस्तान में स्थित है। 1935 में इसकी खुदाई की गई थी।
  - **लोथल** गुजरात के अहमदाबाद जिले में खंभात की खाड़ी के पास भोगवा नदी के तट पर स्थित है। इसकी खुदाई 1953 में की गई थी। यह अपने डॉकयार्ड के लिए जाना जाता है।
  - **धोलावीरा** गुजरात में कच्छ के रण में स्थित है। 1985 में इसकी खुदाई की गई थी।
  - **कालीबंगन** राजस्थान में घग्घर नदी के तट पर स्थित है। 1953 में इसकी खुदाई की गई थी।
  - **मांडा** चिनाब नदी के दाहिने किनारे पर स्थित है। 1976–77 में इसकी खुदाई की गई थी।
  - **कोटदीजी** पाकिस्तान में सिंधु नदी के तट पर स्थित है। 1955 और 1957 में इसकी खुदाई की गई थी।
  - **चन्हुदड़ो** सिंध, पाकिस्तान में स्थित है और 1931 में इसकी खुदाई की गई थी।
  - शोर्तुघई और मुंडिघाक स्थल अफगानिस्तान में स्थित हैं।
  - **राखीगढ़ी** यह भारत में स्थित हड़प्पा स्थल है, जिसमें हाकरा मृदभांड के भंडार शामिल हैं जो सिंधु सभ्यता के शुरुआती चरणों से पहले की बसावट की विशेषता हैं।

साइट	जाँच – परिणाम
हड़प्पा	**उत्खनन:** दयाराम साहनी (1921), माधो स्वरूप वत्स (1926) और सर मोर्टिमर व्हीलर (1946)
	पुरातात्विक निष्कर्ष: पंक्ति में छह अन्न भंडार, श्रमिकों के आवास, उर्वरा देवी की मुहर, कब्रिस्तान (आर – 37, एच), चित्रित मिट्टी के बर्तन, देवी माँ की मूर्ति, लिंगम (पुरुष यौन अंग) और योनी (महिला यौन अंग) के पत्थर के प्रतीक, लकड़ी के बक्से में जौ और गेहूँ, तांबे का पैमाना, कांस्य के लिए एक क्रूसिबल और तांबे से बना दर्पण, वैनिटी बॉक्स, पासा प्राप्त हुए हैं।
मोहनजोदड़ो/मृतकों का टीला/नखलिस्तान/सिंध का मरूद्यान	**उत्खनन:** राखल दास बनर्जी (1922), मैके (1927) और मोर्टिमर व्हीलर (1930)
	पुरातात्विक निष्कर्ष: विशाल अन्न भंडार, विशाल स्नानागार (यह सभ्यता की सबसे बड़ी इमारत है), सभा भवन (असेंबली हॉल), पशुपति महादेव/प्रोटो शिव की मुहर, एक नृत्य करने वाली लड़की की कांस्य प्रतिमा, दाढ़ी वाले व्यक्ति की सेलखड़ी की मूर्ति, देवी माँ की मिट्टी की मूर्तियां, सूती वस्त्र के टुकड़े, ईंट के भट्टे, दो मेसोपोटामिया की मुहरें, 1398 मुहरें (सभ्यता की कुल मुहरों का 56%)।

साइट	जाँच – परिणाम
लोथल	**उत्खनन:** एस.आर. राव (1957)
	पुरातात्विक निष्कर्ष: गोदीवाडा (डॉकयार्ड), चावल की भूसी, आग की वेदी, एक घोड़े की टेराकोटा मूर्ति, डबल दफन (एक ही कब्र में दफन एक नर और एक मादा), फारसी / ईरानी और बहरीनियन मुहर, पक्षी और लोमड़ी के साथ चित्रित एक जार।
कालीबंगन/काले रंग की चूड़ियाँ	**उत्खनन:** अमला नंद घोष (1953), डॉ. बी.बी. लाल और बी.के. थापर (1961)
	पुरातात्विक निष्कर्ष: एक पूर्व–हड़प्पा क्षेत्र, सात अग्नि वेदी, सजी हुई ईंटें, एक खिलौना गाड़ी के पहिये, मेसोपोटामिया की बेलनाकार मुहर।
चन्हूदडो	**उत्खनन:** एनजी मजूमदार (1931), ईजेएच मैके (1935)
	पुरातात्विक निष्कर्ष: बिना गढ़ वाला शहर, दवात, लिपिस्टिक, मोतियों की दुकान, ईंट पर बिल्ली का पीछा करते आदि कुत्ते के पंजे की आकृति, बैलगाड़ी का टेराकोटा मॉडल, कांस्य खिलौना गाड़ी।
रंगपुर (गुजरात)	**उत्खनन:** एम. एस. वत्स (1931), एस. आर. राव (1953–54)
	पुरातात्विक निष्कर्ष: चावल की भूसी
बनावली (हिसार, हरियाणा)	**उत्खनन:** आरएस बिष्ट (1973–74)
	पुरातात्विक निष्कर्ष: ग्रिड पैटर्न टाउन प्लानिंग का अभाव, व्यवस्थित जल निकासी व्यवस्था का अभाव, मिट्टी का बना हल, खिलौना हल।
आलमगीरपुर (मेरठ, यूपी)	**उत्खनन:** वाई डी शर्मा (1958)
कोट दीजी (सिंध, पाकिस्तान)	**उत्खनन:** घुर्रे (1935), फजल अहमद (1955)
अमरी (सिंध, पाकिस्तान)	**उत्खनन :** एनजी मजूमदार (1929)
रोपड़ (पंजाब)	**उत्खनन:** वाई डी शर्मा (1955–56)
सुरकोटड़ा (कच्छ, गुजरात)	**उत्खनन:** जेपी जोशी (1964)
	पुरातात्विक खोज: घोड़े की हड्डियाँ (केवल वह स्थान जहाँ घोड़े की हड्डियाँ मिली हैं), ओवल कब्र, पॉट दफन।
सुतकनाडोर (सिंध, पाकिस्तान)	**उत्खनन:** ए स्टीन (1927)
धौलावीरा, गुजरात	**उत्खनन:** जेपी जोशी, आरएस बिष्ट (1990–91)
	पुरातात्विक निष्कर्ष: एक अद्वितीय जल संचयन प्रणाली और इसकी विशेष जल निकासी प्रणाली, एक विशाल जल जलाशय, यहाँ साइट को 3 भागों में विभाजित किया गया है।
राखीगढ़ी (हरियाणा)	**उत्खनन :** अमरेंद्र नाथ (2014)
दैमाबाद	**पुरातात्विक खोज:** कांस्य चित्र (रथ, बैल, हाथी और गैंडे के साथ सारथी)

- **हड़प्पा सभ्यता की अनूठी विशेषताएं:**
  - व्यवस्थित नगर–नियोजन 'ग्रिड सिस्टम' की तर्ज पर योजना
  - निर्माण में पक्की ईंटों का उपयोग
  - भूमिगत जल निकासी प्रणाली (धौलावीरा में विशाल जलाशय)
  - किलेबंद दुर्ग (अपवाद – चन्हुदड़ो)
- **शासक** वे लोग थे जो शहर में विशेष भवनों में रहते थे। शासकों ने लोगों को दूर देशों में धातु, कीमती पत्थर, और अन्य चीजें जो वे चाहते थे, प्राप्त करने के लिए भेजा।
- मुहरों के निर्माण में सेलखड़ी का प्रयोग किया जाता था। मुहरों पर कूबड़ वाले बैल की छवि थी। **शास्त्री** वे लोग थे जो लिखना जानते थे और मुहरों को तैयार करने में मदद करते थे और शायद अन्य सामग्रियों पर लिखते थे परन्तु अब वे शेष नहीं बची हैं।
- गेहूँ और जौ मुख्य फसलें थीं और खजूर, सरसों, तिल, कपास आदि अन्य फसलें थीं।
- चावल की खेती के प्रमाण लोथल और रंगपुर (गुजरात) से मिले हैं। कृपया ध्यान दें कि सिंधु लोग दुनिया में सबसे पहले कपास (ग्रीक में सिंडन) का उत्पादन करने वाले लोग थे।

क्या आप जानते हैं?

★ सिंधु घाटी सभ्यता के लोग कपास उगाने में सर्वप्रथम थे। इसीलिए यूनानी लोग इसे सिन्डोन कहते थे।

- यद्यपि भेड़, बकरी, कूबड़ रहित बैल, भैंस, सूअर, कुत्ता, बिल्ली, सुअर, मुर्गी, हिरण, कछुआ, हाथी, ऊँट, गैंडा, बाघ आदि इस सभ्यता के महत्वपूर्ण प्राणी थे, फिर भी शेर उन्हें ज्ञात नहीं था। अमरी (सिंध, पाकिस्तान) से गैंडे के अवशेष मिले हैं।
- **विदेश व्यापार** सिन्धु लोगों के मेसोपोटामिया या सुमेरिया और बहरीन आदि के साथ व्यापारिक संबंध थे। वे कृषि उत्पाद, मिट्टी के बर्तन, सूती सामान, कुछ मनके, टेराकोटा की मूर्तियाँ, शंख, हाथी दाँत के उत्पाद और तांबे आदि का निर्यात करते थे।

- चन्हुदड़ो से मोतियों का निर्यात किया जाता था और लोथल से शंख का निर्यात किया जाता था।

क्या आप जानते हैं?

★ प्राचीन काल में सिन्धु सभ्यता क्षेत्र को सुमेरियन लोग मेलुहा कहते थे । सुमेरियन अभिलेख बहरीन को दिलमुन और मकरान तट को माकन के रूप में संदर्भित करते है ।

- ऐसा माना जाता है कि सिंधु सभ्यता में शासन व्यापारी वर्ग के हाथों में था।
- जहां तक धर्म का संबंध है, कोई मंदिर नहीं मिला है। माँ देवी (मातृदेवी या शक्ति) की मूर्ति योनि (महिला यौन अंग) की पूजा को संदर्भित करती है। लिंगम (लिंगम) पूजा भी प्रचलित थी।
- पशुपति शिव या जानवरों के देवता या रूद्र शिव प्रमुख पुरुष देवता थे। एक मुहर मिली है जो चार जानवरों (हाथी, बाघ, गैंडे और भैंस) से घिरे एक योगी को दर्शाती है और उनके चरणों में दो हिरण दिखाई देते हैं।
- **लिपि:** सिंधु घाटी की लिपि चित्रात्मक थी। यह लिपि अभी तक पढ़ी नहीं जा सकी है। लेखन बुस्ट्रोफेडन था और वैकल्पिक पंक्तियों में दाएं से बाएं और बाएं से दाएं लिखा जाता था।
- इस काल में प्रायः मृतकों को दफनाया जाता था।

वैदिक युग (1500–600 ईसा पूर्व)

- सिंधु घाटी सभ्यता के पतन के बाद, 1500 ईसा पूर्व के आसपास आर्यों द्वारा भूमि पर कब्जा कर लिया गया था। आर्यन शब्द का अर्थ है 'कुलीन' होता है।
- उनके कब्जे वाली भूमि को 'सप्त सिंधु' कहा जाता था जिसका अर्थ है 'सात नदियों की भूमि'। सात नदियों में सिंधु (सिंधु), वितस्ता (झेलम), आक्सिनी (चिनाब), परुष्णी (रावी), विपाशा (व्यास), शुतुद्री (सतलज) [सभी पंजाब में], और राजस्थान में सरस्वती (सरसुती) शामिल हैं। अन्य नदियाँ राजस्थान में दृषद्वती (घग्गर), गोमती (गोमल) उत्तर प्रदेश कुभा (काबुल), सुवास्तु (स्वाति), क्रुमु (कुर्रम) [सभी अफगानिस्तान में] थीं।
- ऋषि मनु के अनुसार पुरानी पवित्र नदी सरस्वती और दृषद्वती के बीच का भू–भाग 'ब्रह्मवर्त' था।
- इन्होंने अपने मनुस्मृति ग्रंथ में ब्रह्मवर्त के बारे में लिखा है, कि यह भू–भाग पवित्र नदियों से घिरा हुआ है। सरस्वती नदी इसके पूर्व में, दृषद्वती नदी इसके पश्चिम में, हिमालय पर्वत इसके उत्तर में और विंध्य पर्वत इसके दक्षिण में स्थित हैं।
- ऋषि मनु ने ब्रह्मवर्त और आर्यावर्त को एक ही भू–भाग के दो अलग–अलग नामों के रूप में वर्णित किया है। उनके अनुसार ब्रह्मवर्त सरस्वती नदी के किनारे का भू–भाग था, जो आर्यावर्त का भी एक हिस्सा था।

विभिन्न विद्वानों के अनुसार आर्यों की मूल मातृभूमि

मातृभूमि	पंडित
आर्कटिक क्षेत्र	बाल गंगाधर तिलक
तिब्बत	स्वामी दयानंद सरस्वती
मध्य एशिया	मैक्स मुलर
तुर्किस्तान	हुन फेल्ड्ट
बैक्ट्रिया	जेसी रॉड
सप्त सिंधु	डॉ. अविनाश चंद्र दास और डॉ. संपूर्णानंद
कश्मीर और हिमालयी क्षेत्र	डॉ. एलडी कल्ला
यूरोप	सर विलियम जोन्स
मैदान	पी. नेहरिंग
पश्चिमी साइबेरिया	मॉर्गन

समय, प्रसार और स्रोत	
भौगोलिक सीमा	उत्तर भारत
अवधि	लौह युग
समय	1500 ईसा पूर्व (बीसीई) – 600 ईसा पूर्व (बीसीई)
सूत्रों का कहना है	वैदिक साहित्य
सभ्यता की प्रकृति	ग्रामीण

- ऐसा माना जाता है कि आर्यों ने 2000 ईसा पूर्व – 1500 ईसा पूर्व के दौरान कई लहरों के रूप में मध्य एशिया से भारतीय उपमहाद्वीप में प्रवास किया था। यह एशिया माइनर, तुर्की में पाए जाने वाले बोगाजकोई शिलालेख से सिद्ध होता है। इस शिलालेख में चार वैदिक देवताओं अर्थात इंद्र, वरुण, मित्र और नासत्य का उल्लेख है।
- वैदिक युग को दो अवधियों में विभाजित किया गया है अर्थात् प्रारंभिक वैदिक (ऋग्वैदिक) काल (1500–1000 ईसा पूर्व) और बाद का वैदिक काल (1000–600 ईसा पूर्व)।
- **प्रारंभिक वैदिक (ऋग्वैदिक) काल (1500–1000 ईसा पूर्व):** इस काल के ज्ञान का एकमात्र साहित्यिक स्रोत "ऋग्वेद" है।
- **दस राजाओं की लड़ाई (दशराज्ञ युद्ध):** इस युद्ध का नाम उन दस राजाओं के नाम पर दशराज रखा गया है, जिन्होंने सुदास (तृत्सु वंश के भरत राजा) के खिलाफ लड़ाई लड़ी थी। अन्य दस राजा पुरु, यदु, तुर्वस, अनु और द्रुह्यु, अलीना, पख्त, भलानस, सिबिस और विशानिन राज्यों से थे। यह युद्ध परुष्णी (रावी) के तट पर लड़ा गया था और इस युद्ध में भरत जन के राजा सुदास की विजय हुई थी।
- **ऋग्वैदिक काल में राजव्यवस्था:** सामाजिक और राजनीतिक दोनों संरचनाओं का आधार कुल (परिवार) था। कुल के ऊपर ग्राम, विस, जन और राष्ट्र थे। कुछ कुल (परिवार) मिलकर एक ग्राम (गाँव) बनाते थे, इत्यादि।

इकाई	सिर
कुल (परिवार)	कुलप
ग्राम (गाँव)	ग्रामणी
विस (कबीले)	विसपति
जन (लोग)	गोप/गोपति
राष्ट्र (देश)	राजन

- इस समय शासन की संरचना प्रकृति में पितृसत्तात्मक थी। हालाँकि राजतंत्र का शासन था, फिर भी कुछ गैर–राजशाही राजनीतिक प्रणालियाँ थीं।
- राष्ट्र पर एक राजा या राजन का शासन था, और ज्येष्ठाधिकार कानून के आधार पर, शाही वंश वंशानुगत था। सबसे अधिक संभावना है, एक वैकल्पिक राजशाही को भी मान्यता दी गई थी।
- राजा के मंत्रियों के बारे में बहुत कम जानकारी है। पुरोहित, शीर्ष पर प्राधिकारी थे। उन्होंने राजा के संरक्षक, विश्वासपात्र, साथी और दार्शनिक

के रूप में कार्य किया। सेना के सेनापति सेनानी और गाँव के नेता ग्रामानी अन्य महत्वपूर्ण शाही अधिकारी थे।

- सेना में पैदल सैनिक और सारथी होते थे। हथियार धातु, लकड़ी, पत्थर और हड्डी के बने होते थे। धातु या जहरीले सींग को तीर की नोक के रूप में इस्तेमाल किया जाता था। किलौ (पुरो) पर हमला करने के लिए एक उपकरण पुरचरिश्नु का उल्लेख किया गया है।
- राजा के भी धार्मिक दायित्व होते थे। उन्होंने स्थापित आदेश और नैतिक सिद्धांतों की रक्षा की।
- ऋग्वेद में सभा, समिति, विदथ और गण जैसी सभाओं का उल्लेख है। सभा वरिष्ठ लोगों द्वारा बनाई गई थी। विशेषाधिकार प्राप्त और महत्वपूर्ण व्यक्तियों की एक संस्था थी। सभा और समिति, दो लोकतान्त्रिक सभाएँ, राजाओं के मनमाने शासन पर रोक लगाने का काम करती थीं। बाद के वेदों ने कानून की संस्था के रूप में सभा की भूमिका का उल्लेख किया है।
- चोरी, सेंधमारी, मवेशियों की चोरी और धोखाधड़ी कुछ तत्कालीन अपराधों में शामिल थे।
- **ऋग्वैदिक काल में समाज:** अपने आरम्भिक समय में ऋग्वैदिक सभ्यता में जाति का स्पष्ट विभाजन नहीं मिलता है। व्यक्तियों के व्यवसायों या नौकरियों के आधार पर, समाज को वर्गीकृत किया गया था।
- एक सामान्य विभाजन के क्र में शिक्षकों और पुजारियों को ब्राह्मणों के रूप में जाना जाता था, जबकि प्रशासकों और राजाओं को क्षत्रिय, किसानों, व्यापारियों और बैंकरों को वैश्य, और श्रमिकों और कारीगरों को शूद्र के रूप में जाना जाता था।
- लोगों ने अपनी योग्यता और पसंद के आधार पर इन व्यवसायों को चुना था व्यवसाय वंशानुगत नहीं थे हालांकि वे बाद में वे आनुवंशिक बन गए।
- ऋग्वेद का एक भजन बताता है कि कैसे एक ही परिवार के सदस्यों ने अलग–अलग व्यवसायों को चुना जो कई वर्णों से संबंधित थे। ऋग्वेद के एक श्लोक में एक व्यक्ति कहता है–'मैं एक गायक हूँ! मेरे पिता एक चिकित्सक हैं, मेरी माँ मकई की चक्की है।'
- परिवारों ने इस पितृसत्तात्मक, एक पत्नीक सभ्यता में बुनियादी सामाजिक ऋवेद के एक श्लोक इकाई का निर्माण किया। बाल विवाह का कोई क्रेज नहीं था।
- एक विधवा अपने दिवंगत पति के छोटे भाई (नियोग) से शादी कर सकती थी।
- इस विवाह से उत्पन्न पुत्र को पिता की संपत्ति विरासत में मिलती थी।
- संपत्ति के अधिकार दोनों प्रकार की सम्पत्तियाँ जैसे घरों और भूमि के साथ–साथ घोड़ों, जानवरों, सोने और आभूषणों जैसी अचल वस्तुओं के लिए मौजूद थे। शिक्षक का घर वह विद्यालय होता था जहाँ वे विशेष पवित्र ग्रंथों की शिक्षा देते थे।
- ऋग्वैदिक काल के आहार में महत्वपूर्ण मात्रा में दही, मक्खन और घी जैसे अन्य डेयरी उत्पाद शामिल थे। ''दूध में पका हुआ चावल" (क्षीर–पकामोदनम) को देवताओं के प्रिय भोज्य के रूप में उल्लेख किया गया है। वे मछली, पक्षी और जानवरों का मांस खाया करते थे।
- गाय को पहले से ही अघन्य अर्थात न मारने योग्य माना जाता था।
- ऋग्वेद के अनुसार, गायों को नुकसान पहुँचाने या मारने वालों को मौत की सजा दी जाती है या राज्य से निर्वासित कर दिया जाता है।
- सुरा, सोम और मादक पेय का भी सेवन किया जाता था।
- ऋग्वैदिक काल में अधिकांश आर्य किसान और चरवाहे थे जिनकी सम्पत्ति का मूल्य आय में मापा जाता था।
- मनोरंजन में संगीत, नृत्य, रथ–दौड़ और नृत्य शामिल थे। ऋग्वेद का एक श्लोक जुआरी के विलाप करने का उल्लेख हुआ है 'मेरी पत्नी मुझे अस्वीकार करती है और उसकी माँ मुझसे नफरत करती है'।
- ऋग्वैदिक काल में जिन देवताओं की पूजा की जाती थी, वे आमतौर पर प्रकृति की शक्तियाँ थीं। यह माना जाता था कि दैवीय शक्तियाँ मनुष्य को वरदान और दंड दोनों प्रदान करने में सक्षम हैं।
- इस काल में अग्नि पवित्र देवता था, क्योंकि इसे मनुष्य और ईश्वर के बीच मध्यस्थ माना जाता था। लगभग 33 देवता थे। बाद के दिनों की परंपरा ने उन्हें स्थलीय (पृथ्वी स्थान), हवाई या मध्यवर्ती (अंतरिक्ष स्थान) और आकाशीय (दुष्टाना) भगवान की 3 श्रेणियों में वर्गीकृत किया।
  - **स्थलीय (पृथ्वी अंतरिक्ष के देवता):** पृथ्वी, अग्नि, सोम, बृहस्पति और नदियाँ।
  - **आकाशीय/मध्यवर्ती (अंतरिक्ष के देवता):** इंद्र, रुद्र, वायु–वात, पर्जन्य।
  - **आकाशीय (आकाश के देवता):** धोस, सूर्य (5 रूपों में: सूर्य, सावित्री, मित्र, पूषा, विष्णु), वरुण, अदिति, उषा और अश्विन।
- इंद्र, अग्नि और वरुण ऋग्वैदिक आर्यों के सबसे लोकप्रिय देवता थे।
  - **इंद्र या पुरंदर (किले को नष्ट करने वाला):** सबसे महत्वपूर्ण देवता (250 ऋग्वैदिक मंत्र उन्हें समर्पित हैं); जिन्होंने योद्धा की भूमिका निभाई और उन्हें वर्षा देवता माना जाता था।
  - **अग्नि:** दूसरा सबसे महत्वपूर्ण देवता (200 ऋग्वैदिक मंत्र उन्हें समर्पित हैं); अग्नि देवता को देवताओं और लोगों के बीच मध्यस्थ माना जाता था।
  - **वरुण:** व्यक्तिकृत जल; रीता' या प्राकृतिक व्यवस्था (ऋतस्यगोप) ऋत को बनाए रखने वाला था।
- सूर्य (सूर्य) की पूजा 5 रूपों में की जाती थी: सूर्य, सावित्री, मित्र, पूषा और विष्णु।
  - **सूर्य:** सूर्य भगवान जो सात घोड़ों द्वारा संचालित अपने रथ में प्रतिदिन आकाश में घूमते थे।
  - **सावितो (प्रकाश की देवता):** प्रसिद्ध गायत्री मंत्र उन्हें संबोधित है।
  - **मित्र:** एक आकाश देवता।
  - **पूषन:** विवाह के देवताय मुख्य कार्य–सड़कों, चरवाहों और आवारा पशुओं की रखवाली करना था।
  - **विष्णु:** एक देवता जिसने पृथ्वी को तीन चरणों (उपक्रम) में ढक लिया।
- **सोम:** मूल रूप से अग्निस्टोमा यज्ञ के दौरान एक मजबूत पेय देने वाला पौधा, शायद भांग / भांग, जिसे पौधों के राजा के रूप में जाना जाता है; या अंततः चंद्रमा के रूप में पहचाना गया। सोम को ऋग्वेद के नौवें मंडल को बनाने का श्रेय दिया जाता है, जिसमें 114 गीत शामिल हैं। इस कारण इसे ''सोम मंडल" के नाम से जाना जाता है।
- **अन्य देवी–देवता:** रुद्र (जानवरों के देवता), द्यौस (सबसे पुराने देवता और दुनिया के पिता), यम (मृत्यु के देवता)। अश्विन नास्त्य (स्वास्थ्य, युवा और अमरता के देवता); अदिति (देवताओं की माता), सिंधु (नदियों की देवी)।
- कभी–कभी देवताओं को जानवरों के रूप में देखा जाता था लेकिन जानवरों की पूजा नहीं होती थी।

- ऋग्वैदिक धर्म बहुदेववादी था, या कई देवताओं में विश्वास रखता था, जिनमें से प्रत्येक को अलग–अलग समय में सर्वोच्च माना जाता था।
- देवताओं की पूजा यज्ञ के रूप में जाने जाने वाले अनुष्ठान के माध्यम से की जाती थी। आहुति के रूप में दूध, घी, अनाज, मांस और सोम आदि की आहुति दी जाती थी।
- **ऋग्वैदिक काल में अर्थव्यवस्था:** आर्य खानाबदोश चरण से आगे बढ़ गए। फिर भी गाय के झुंड उनके लिए बहुपयोगी थे कई पालतू जानवर थे।
- बिल्लियाँ और ऊँट जैसे जानवर संभवतः वैदिक लोगों के लिए अपरिचित थे। बाघ अज्ञात था, लेकिन वे अन्य जंगली जानवरों जैसे शेर, हाथी और सूअर से परिचित थे। व्यवहार में ज्यादा लेन–देन नहीं होता था।
- हालांकि बाजार मौजूद था परन्तु मुद्रा अस्तित्व में नहीं थी, लेकिन उनका व्यापक रूप से उपयोग नहीं किया जाता था। गायों और निश्चित मूल्य के सोने के आभूषणों विनिमय के माध्यम के रूप में कार्य करते थे। कोई ज्ञात सिक्के नहीं थे। उत्पाद उत्पादन में जटिलता स्पष्ट हो गई।
- अन्य व्यवसायों में बढ़ई, लोहार, चर्मकार, बुनकर, कुम्हार और चक्की पीसने का काम करने वाले पुरुष शामिल थे। बीमारियों और घावों के इलाज के लिए एक चिकित्सा विज्ञान मौजूद था। और विशेषज्ञ थे। शल्य चिकित्सा भी।
- जड़ी–बूटियों और औषधियों के साथ–साथ ताबीज और मंत्र के द्वारा रोगों को ठीक करने में प्रयोग में लाया जाता था।
- **उत्तरवैदिक वैदिक काल (1000–600 ईसा पूर्व):** उत्तर वैदिक काल के दौरान, आर्यन बस्तियां वस्तुतः पूरे उत्तरी भारत (आर्यावर्त) को कवर करती थीं। संस्कृति का केंद्र अब सरस्वती से गंगा (मध्य देश) में स्थानांतरित हो गया था।
- उत्तर वैदिक काल में नर्मदा, सदानीरा (आधुनिक गंडक), चंबल आदि नदियों का उल्लेख मिलता है।
- पूर्व की ओर लोगों के विस्तार का संकेत शतपथ ब्राह्मण की एक कथा में मिलता है– कैसे विदेह माधव सरस्वती क्षेत्र से चले गए, सदानिरा को पार कर विदेह (आधुनिक तिरहुत) की भूमि पर बस गए।
- दोआब क्षेत्र में जनपद–कुरु (पुरुष और भरत का संयोजन), पंचाल (तुर्वशास और कृविस का संयोजन), काशी आदि के उद्भव तथा बाद के वैदिक साहित्य में विंध्य पर्वत (दक्षिणी पर्वत) का उल्लेख है। प्रादेशिक विभाजनों के संदर्भ में बाद के वेद भारत के तीन व्यापक विभाजन देते हैं, जैसे। आर्यावर्त (उत्तरी भारत), मध्य देश (मध्य भारत) और दक्षिणापथ (दक्षिणी भारत)।
- उत्तर वैदिक काल में बड़े राज्यों और भव्य शहरों ने अपनी उपस्थिति दर्ज कराई। तैत्तिरीय ब्राह्मण में हम राजाओं की दैवीय उत्पत्ति के सिद्धांत का उल्लेख पाते हैं।
- राजा की शक्ति के विकास की अगली कड़ी के रूप में सरकारी तंत्र पहले की तुलना में अधिक विस्तृत हो गया। ऋग्वैदिक काल के एकमात्र नागरिक अधिकारी के अलावा, नागरिक आधिकारी व पुरोहित अस्तित्व में आए।
- ये थेः भगदुधा (कर संग्रहकर्ता), सुता/सारथी, शास्त्री (चैम्बरलेन), अक्षवापा संदेश वाहक। ऋग्वैदिक काल के सैन्य अधिकारी, सेनानी (सैन्य प्रमुख) और ग्रामणी (गाँव का मुखिया) कार्यरत् थे।
- इस अवधि में प्रांतीय सरकार की एक नियमित प्रणाली की शुरुआत भी देखी गई। इस प्रकार, हम पाते हैं कि स्थपति को आदिवासियों के कब्जे वाले बाहरी क्षेत्रों के प्रशासन का काम सौंपा गया है और सतपति सौ गाँवों के समूह का शासक होता था। अधिकारिक ग्राम अधिकारी थे। उपनिषद में वर्णित उग्रस संभवतः एक पुलिस के लिए प्रयुक्त हुआ शब्द है।
- ऋग्वैदिक युग के समान, अधिकारों का प्रयोग सभा और समिति के माध्यम से किया जाता था। इस समय तक, विदथ पूरी तरह से गायब हो गया था।
- बाद के वैदिक युग में भी राजाओं के पास स्थायी सेना नहीं थी।
- न्यायपालिका का भी विस्तार हुआ। कानून को लागू करने में राजा का बहुत महत्वपूर्ण स्थान था। एक भ्रूण की हत्या, मानव वध, विशेष रूप से एक ब्राह्मण की हत्या, सोने की चोरी और सुरा पीने को भयानक अपराध माना जाता था। देशद्रोह एक गंभीर अपराध था।
- **उत्तर वैदिक काल में समाज:** जैसे–जैसे समय बीतता गया, यज्ञ विस्तृत और जटिल औपचारिक होते गए, जो ब्राह्मणों के रूप में ज्ञात विद्वानों के उद्भव के लिए महत्वपूर्ण थे।
- क्षत्रियों के रूप में जाने जाने वाले लोगों का एक समूह नई भूमि पर विजय प्राप्त करने और शासन करने के लिए उभरा, क्योंकि आर्य पूर्व और दक्षिण में फैले हुए थे। शेष आर्यों ने एक अलग समूह की स्थापना की जिसे विश (वैश्य) कहा जाता है।
- चौथा वर्ग, शूद्र, गैर–आर्यों का था। हालाँकि, ये सामाजिक भेद लचीले थे। बाद के वैदिक काल में, गोत्र, या कबीले की संस्था सबसे पहले विकसित हुई।
- उच्च जातियों को निम्न जातियों के साथ विवाह करने की अनुमति थी, लेकिन शूद्रों के साथ ऐसा नहीं था। प्रदूषण समाज में एक अवधारणा बन गया।
- जाब्लो उपनिषद में चार आश्रमों (जीवन के चरणों) का सबसे पहला उल्लेख हुआ है; ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ और सन्यास। चार पुरुषार्थों (धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष) को प्राप्त करने के लिए आश्रम प्रणाली की स्थापना की गई थी।
- महिलाओं की स्थिति गिर गई। ऐतरेय ब्राह्मण ने दावा किया कि एक पुरुष परिवार का रक्षक होता है जबकि एक बेटी दुख का कारण होती है।
- मैत्रायणी संहिता हैंः शराब, स्त्री और पासा।
- हालाँकि बहुविवाह – एक पुरुष जिसकी एक से अधिक पत्नियाँ होती हैं – सामान्य थी, यद्यपि एक विवाह – एक पुरुष जिसकी केवल एक पत्नी हो – आदर्श माना जाता था। महिलाओं को राजनीतिक सभाओं में भाग लेने की अनुमति नहीं थी।
- याज्ञवल्क्य–गार्गी संवाद (बृहदारण्यक उपनिषद) इंगित करता है कि कुछ महिलाओं ने उच्च शिक्षा प्राप्त की थी।

हिंदू विवाह के प्रकार (विवाह)	
ब्रह्म विवाह	लड़की को दहेज में किसी व्यक्ति को देना।
दैव विवाह	अपनी पुत्री का विवाह पुजारी के साथ कर देना।
आर्ष विवाह	वधू–मूल्य के रूप में बैल की जोड़ी दी जाती थी।
प्रजापत्य विवाह	बिना वधू–मूल्य मांगे लड़की को एक आदमी को दे देना।
गंधर्व विवाह	प्रेम विवाह
असुर विवाह	विक्रय की गई कन्या से विवाह।
राक्षस विवाह	पराजित राजा की पुत्री से या अपहृत कन्या से विवाह।
पैशाच विवाह	बहला–फुसलाकर या बलात्कार (शरीर पर अधिकार) करके लड़की से विवाह।

- **अनुलोम विवाह:** एक उच्च जाति के पुरुष और एक निचली जाति की महिला के बीच विवाह; अनुलोम विवाह कहलाता था।
- गर्भधान, पुंसवन, सीमंतोन्नयन, जातकर्म, नामकरण, निष्क्रमण, अन्नप्राशन, चूड़ाकर्म, कर्णछेदन, विद्यारंभ, उपनयन, वेदारंभ, समावर्तन, विवाह, वानप्रस्थ और अंत्येष्टि नाम से सोलह संस्कार थे।
- **बाद के वैदिक काल में धर्म:** पहले के देवता इंद्र और अग्नि पृष्ठभूमि में चले गए जबकि प्रजापति (ब्रह्मांड के निर्माता, जिसे बाद में ब्रह्मा के रूप में जाना गया है), विष्णु (आर्यों के संरक्षक देवता) और रुद्र (जानवरों के देवता, बाद में शिव के रूप में पहचाने गए) / महेश) प्रमुखता से उभरे। इस काल में प्रजापति सर्वोच्च देवता बन गए।
- प्रारंभिक वैदिक काल में मवेशियों की रक्षा करने वाले पूषण अब शूद्रों का देवता बन गये। बृहदारण्यक उपनिषद सबसे पहले स्थानान्तरण (पुनर्जन्म/संसार–चक्र) और कर्म (कर्म) का सिद्धांत स्थापित करने वाला पहला ग्रंथ था।
- ऋग्वैदिक काल के आरंभिक चरण में साधारण अनुष्ठानों में विस्तृत बलिदानों का स्थान दिया गया जिसके लिए 17 पुजारियों की सेवाओं की आवश्यकता थी। बाद के वेदों और ब्राह्मणों में बलिदान (यज्ञ) की प्रमुखता स्थापित हो गई।
- यज्ञ दो प्रकार के होते थे–
  - **लघु यज्ञ (सरल यज्ञ):** ये गृहस्थों द्वारा किए जाते थे जैसे पंच महायज्ञ, अग्निहोत्र, दर्श यज्ञ (अमावस्या पर यानी कृष्ण पखवाड़े के अंतिम दिन), पूर्णमास यज्ञ (पूर्णिमा के दिन) आदि।
  - **महायज्ञ (भव्य यज्ञ):** ये वे यज्ञ थे जो केवल एक कुलीन और धनी व्यक्ति और राजा ही कर सकते थे।
    - **राजसूय यज्ञ:** राज्याभिषेक जिसमें अपने पूर्ण रूप में एक वर्ष से अधिक समय तक चलने वाले बलिदानों की एक शृंखला शामिल थी। बाद के दिनों में इसका स्थान सरलीकृत राज्याभिषेक ने ले लिया।
    - **वाजपेय यज्ञ:** शक्ति का पेय, जो एक वर्ष सत्रह दिनों की अवधि तक चलता था।
    - **अश्वमेध यज्ञ:** अश्वमेध यज्ञ, यह तीन दिनों तक चलता था इस यज्ञ में जानवरों की बलि दी जाती थी।
    - **अग्निष्टोम यज्ञ:** अग्नि को समर्पित यह यज्ञ एक दिन तक चलता था, हालांकि यज्ञिका (यज्ञ के कर्ता) और उनकी पत्नी यज्ञ से पहले एक वर्ष के लिए तपस्वी जीवन व्यतीत करते थे। इस यज्ञ में सोम रस का सेवन किया जाता था।
- उपनिषद उस मजबूत भावना का प्रतिबिंब हैं जो वैदिक काल के अंत में पंथों, कर्मकांडों और पुरोहितों के प्रभुत्व के विरोध में उभरी थी।
- **उत्तर वैदिक काल में अर्थव्यवस्था:** पशुपालन का स्थान कृषि ने ले लिया। एक समय 24 बैलों का प्रयोग हल चलाने के लिए किया जाता था। खाद का प्रयोग भी किया जाता था, उसके करिषु शब्द का प्रयोग हुआ है।
- इस काल में गेहूँ, जौ, फलियाँ, तिल और चावल सभी उगाए जाते थे।
- नए रोजगार जैसे मछुआरे, धोबी, रंगरेज, द्वारपाल, और मोची दर्शाते हैं कि वस्तुओं का उत्पादन बड़े पैमाने पर होता था।
- विशेषाता का संकेत देते हुए रथ–निर्माता, बढ़ई, चर्मकार के बीच भेद किया जाता था। धातुओं के बारे में हमारी समझ में महत्वपूर्ण सुधार हुए हैं। ऋग्वेद में सोने और अयस (या तो तांबे या लोहे) के अलावा, टिन, चांदी और लोहे का उल्लेख किया गया था।
- कंपनियों (गणों) और एल्डरमेन (श्रेष्ठिनों) के उल्लेख ने इस बात का सबूत दिया कि व्यापारियों को संघों में संगठित किया गया था।
- पीजीडब्ल्यू (चित्रित ग्रे वेयर) संस्कृति–इस समय बड़े पैमाने पर प्रचलन में थी।
- **वैदिक साहित्य:** वैदिक साहित्य को दो श्रेणियों अर्थात श्रुतियों और स्मृतियों में वर्गीकृत किया गया है।
  - **श्रुति:** वैदिक साहित्य को "श्रुति" के रूप में जाना जाता है क्योंकि यह मौखिक रूप से पीढ़ी–दर–पीढ़ी स्थानान्तरित की गई है। कृपया ध्यान दें कि 'श्रुति' शब्द का अर्थ है "सुनना"। श्रुतियों में चार वेद, ब्राह्मण, आरण्यक और उपनिषद शामिल हैं।
    - **वेद:** इन्हें अपौरुषेय (मनुष्य द्वारा नहीं बल्कि ईश्वर–प्रदत्त) और नित्य (सभी अनंत काल में विद्यमान) कहा जाता है। जिनमें चार वेद हैं: ऋग्वेद, सामवेद, यजुर्वेद और अथर्ववेद।
    - पहले तीन वेदों (ऋग्वेद, सामवेद और यजुर्वेद) को सामूहिक रूप से वेदत्रयी (वेदों की तिकड़ी) के रूप में जाना जाता है।
      - **ऋग्वेद:** ऋग्वेद भजनों (गीतों) का संग्रह है। यह दुनिया का सबसे प्राचीन ग्रन्थ है। इसे 'मानवता का पहला वसीयतनामा' भी कहा जाता है। इसमें 1028 सूक्त हैं जिन्हें 10 मंडलों में विभाजित किया गया है।
      - छह मंडल (दूसरे से सातवें मंडल तक) को गोत्र/वंश मंडल (कुल ग्रंथ) कहा जाता है। ऐसा माना जाता है कि पहला और 10वां मंडल बाद में जोड़े गए। पुरुष सूक्त, जिसमें चार वर्णों अर्थात ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र की जानकारी मिलती है, 10वें मंडल में है। होत्री नामक पुरोहित द्वारा ऋग्वेद के मंत्रों का पाठ किया जाता था।
      - ऋग्वेद में हिमालय और हिंदुकुश पर्वतों को क्रमशः हिमवंत और मुंजवंत कहा गया है।
      - ऋग्वेद में 40 नदियों का उल्लेख है और नाडी सूक्त में 21 नदियों का उल्लेख है। इसमें पूर्व में गंगा और यमुना तथा पश्चिम में कुभा का उल्लेख है।?
      - ऋग्वेद के तीसरे मण्डल में गायत्री मंत्र का उल्लेख मिलता है। वह सूर्य देवता सवितृ को समर्पित है। गायत्री मन्त्र में आठ-आठ अक्षरों के तीन चरण होते हैं। इस मन्त्र के रचयिता ऋषि विश्वामित्र हैं।
      - ऋग्वेद के अनुसार, सिंधु सबसे अधिक उल्लेखित नदी थी जबकि सरस्वती सबसे पवित्र नदी थी। गंगा नदी का एक बार उल्लेख किया गया है जबकि यमुना नदी का तीन बार उल्लेख किया हुआ है।
      - ऋग्वेद में योग का वर्णन भी किया गया है।
      - **सामवेद:** यह मंत्रों की पुस्तक है और संगीत से सम्बन्धित है। इसमें 1549 सूक्त हैं और सभी सूक्त (75 को छोड़कर) ऋग्वेद से लिए गए हैं। सामवेद के मंत्रों का पाठ उप्रगाता किया जाता था।
      - **यजुर्वेद:** यह यज्ञ प्रार्थनाओं की एक पुस्तक है। अर्ध्वयु नामक पुरोहित द्वारा यजुर्वेद के मंत्रों का पाठ किया जाता है। इसके दो भाग हैं कृष्ण यजुर्वेद (संपूर्ण श्लोक) और शुक्ल यजुर्वेद (पंघ और गद्य दोनों में लिखित)। वायजसनेय शुक्ल यजुर्वेद की संहिता है।

- अथर्ववेद (जादुई सूत्रों की पुस्तक), चौथा और अंतिम, वेद जिसमें बुराइयों और बीमारियों को दूर करने के लिए मंत्र दिये गये हैं। इसे लोकिक वेद भी कहा जाता है। बहुत लंबे समय तक इसे वेदों की श्रेणी में शामिल नहीं किया गया था।

➢ **ब्राह्मण:** ब्राह्मण गद्य ग्रंथ हैं। इसमें वैदिक मंत्रों के अर्थ, उनके अनुप्रयोग और उनकी उत्पत्ति की कहानियों का विस्तार से वर्णन किया गया है। इसके अलावा, यह कर्मकांडों और दर्शन के बारे में भी विस्तार से बताता है।

➢ प्रत्येक वेद के साथ कई ब्राह्मण जुड़े हुए हैं:

- **ऋग्वेद–** ऐतरेय और कौशिकी/संख्यान।
- **साम वेद–** पंचविष (तांड्य महा ब्राह्मण), षडविंश, छांदोग्य और जैमिनीय।
- **यजुर्वेद–** शतपथ (सबसे पुराना और सबसे बड़ा ब्राह्मण) और तैत्तिरीय।
- महाजनी प्रथा' का उल्लेख सर्वप्रथम शतपथ ब्राह्मण में मिलता है।
- **अथर्ववेद–** गोपथ।

➢ **उपनिषद:** उपनिषद दार्शनिक ग्रंथ हैं। उन्हें आमतौर पर वेदांत कहा जाता है, क्योंकि इनकी रचना वेद के अंत में हुई थी। उपनिषद् आर्यों के दर्शन और सिद्धान्तों का वर्णन करता है। उपनिषदो की संख्या 108 है। बृहदारण्यक सबसे प्राचीन उपनिषद है।

❖ स्मृति ग्रंथों का एक निकाय है जिसमें इतिहास, पुराण, तंत्र और आगम जैसे धर्म पर शिक्षाएँ हैं। ये शाश्वत नहीं हैं। उन्हें लगातार संशोधित किया जाता है। 'स्मृति' शब्द का अर्थ निश्चित और लिखित साहित्य है। इसमें 06 विश्व अर्थात् वेदांग/सूत्र, स्मृति धर्मशास्त्र, महाकाव्य (महाकाव्य), पुराण, उपवेद और षड–दर्शन शामिल पुरोहित हैं।

➢ **आरण्यक:** अरण्य का अर्थ है 'जंगल'। ये मुख्य रूप से सन्यासियों के लिए लिखे गए थे। आरण्यक ब्राह्मणों के अंतिम भाग हैं।

➢ **वेदांग:** छह वेदांग हैं:

- **शिक्षा (ध्वन्यात्मकता):** "प्रत्याख्या" – ध्वन्यात्मकता पर सबसे पुराना पाठ।
- **कल्प सूत्र (अनुष्ठान):**
  - श्रौत सूत्र / शुल्व सूत्र – यज्ञ/अनुष्णनों से सम्बन्धित हैं।
  - गृह्य सूत्र – पारिवारिक समारोहों से संबंधित
  - धर्म सूत्र – वर्णों, आश्रमों आदि से संबंधित।
- **व्याकरण (व्याकरण):** 'पाणिनि द्वारा रचित अष्टाध्यायी विश्व का प्राचीनतम व्याकरण ग्रंथ है।
- **निरुक्त (व्युत्पत्ति):** 'निरुक्त' (यास्क) 'निघंटु' (कश्यप) पर आधारित है और कठिन वैदिक शब्दों का संग्रह है। कृपया ध्यान दें कि निघंटु विश्व का सबसे पुराना शब्द–संग्रह है जबकि निरुक्त विश्व का सबसे पुराना शब्द अर्थ संग्रह है।
- **श्री भास्काचार्य** ने 'निरुक्त–व्युत्पत्ति–विज्ञान–भाषाशास्त्र और शब्दार्थ–विज्ञान पर सबसे पुराना भारतीय ग्रंथ' नामक पुस्तक लिखी। निरुक्त छः वेदांगों में से एक है।
- **छंद (मैट्रिक्स):** पिंगल द्वारा लिखित 'छंद सूत्र' एक प्रसिद्ध ग्रंथ है।
- **ज्योतिष (खगोल विज्ञान):** लगध मुनि द्वारा लिखित 'वेदांग ज्योतिष' सबसे पुराना ज्योतिष ग्रंथ है।

➢ **स्मृतियाँ:** छह प्रसिद्ध स्मृतियाँ हैं:

- **मनु स्मृति** यह पुराना स्मृति ग्रन्थ है जो पूर्व–गुप्त काल का है। इसके भाष्यकार विश्वरूप, मेघातिथि, गोबिंदराज और कुल्लूक भट्ट थे।
- **याज्ञवल्क्य स्मृति** पूर्व–गुप्त काल की है और इसके टीकाकार विश्वरूप, विज्ञानेश्वर और अपरार्क (शिलाहार वंश के एक राजा) थे।
- **नारद स्मृति, बृहस्पति स्मृति, कात्यायन स्मृति और पराशर स्मृति** गुप्तकाल की हैं।

➢ **महाकाव्य:** मुख्य रूप से दो महाकाव्य (महाकाव्य) हैं–

- **रामायण या आदि काव्य की** रचना वाल्मीकि ने की थी। यह दुनिया का सबसे पुराना महाकाव्य है। इसमें 7 कांडों में 24,000 श्लोक अर्थात छंद (मूल रूप से 6,000, बाद में – 12,000, अंत में – 24,000) शामिल हैं। पहला और सातवाँ कांडा नवीनतम जोड़ा थे।
- **महाभारत की** रचना वेद व्यास ने की थी। यह दुनिया का सबसे लंबा महाकाव्य है। वर्तमान में, इसमें 1,00,000 श्लोक अर्थात छंद और 18 पर्व शामिल हैं, जिसमें पूरक के रूप में हरिवंश है। भगवद गीता महाभारत के भीष्म पर्व से ली गई है। शांति पर्व महाभारत का सबसे बड़ा पर्व (अध्याय) है। मूल रूप से इसमें 8,800 श्लोक थे और इसे जय संहिता के नाम से जाना जाता था। बाद में इसमें 24,000 श्लोक थे और इसे चतुरविंशती सहस्त्री संहिता / भरत के नाम से जाना जाता था। अंत में, इसमें 1,00,000 थे और इसे शतसहस्त्री संहिता / महाभारत के रूप में जाना गया।
- महाभारत में वर्णित कुरुक्षेत्र की लड़ाई कुल 18 दिन तक लड़ी गई। यह युद्ध कौरव और पांडवों के मध्य कुरु साम्राज्य के सिंहासन की प्राप्ति के लिए लड़ा गया।

➢ **पुराण:** 18 प्रसिद्ध पुराण हैं। मत्स्य **पुराण** प्राचीनतम पुराण ग्रन्थ है। अन्य महत्वपूर्ण पुराण भागवत पुराण, विष्णु पुराण और वायु पुराण हैं। वे विभिन्न शाही राजवंशों की वंशावली का वर्णन करते हैं।

➢ **उपवेद:** उपवेद (सहायक वेद) पारंपरिक रूप से वेदों से जुड़े थे:

- **आयुर्वेद (चिकित्सा)** ऋग्वेद से जुड़ा है जबकि **गंधर्व वेद (संगीत)** सामवेद से जुड़ा है। **धनुर वेद (तीरंदाजी)** यजुर वेद से जुड़ा है जबकि **शिल्प वेद (शिल्प का विज्ञान)** और **अर्थवेद (धन का विज्ञान)** अथर्ववेद से जुड़ा है।

➢ **षड–दर्शन:** दर्शन के छह स्कूल हैं जिन्हें षड–दर्शन के नाम से जाना जाता है। ये इस प्रकार हैं:

- सांख्य दर्शन (संस्थापक: कपिला और मूल पाठ: सांख्य सूत्र)
- योग दर्शन (संस्थापक: पतंजलि और मूल पाठ: योग सूत्र)
- न्याय दर्शन (संस्थापक: गौतम और मूल पाठ: न्याय सूत्र)
- वैशेषिका दर्शन (संस्थापक: कणाद और मूल पाठ: वैशेषिक सूत्र)
- मीमांसा/पूर्व मीमांसा (संस्थापक: जैमिनी और मूल पाठ: पूर्व मीमांसा सूत्र)
- वेदांत/उत्तर मीमांसा (संस्थापक: बादरायण और मूल पाठ: ब्रह्म सूत्र/वेदांत सूत्र)

जैन धर्म और बौद्ध धर्म

- छठी शताब्दी ईसा पूर्व (बीसीई) को प्राचीन भारत के इतिहास में एक महत्वपूर्ण अवधि माना जाता है। छठी शताब्दी ईसा पूर्व (बीसीई) के दौरान व्यापार और शहरीकरण के पुनरुद्धार के साथ उत्तरी भारत में एक नई सभ्यता का विकास शुरू हुआ। उत्तर भारत में प्रमुख राजनीतिक और सामाजिक परिवर्तनों के इस दौर में बुद्ध और महावीर का जन्म हुआ। उनकी मृत्यु के बाद की सदी में, बौद्ध धर्म और जैन धर्म ने भारत में प्रमुख धर्मों के रूप में जड़ें जमा लीं।
- **जैन धर्म:** जैन शब्द की उत्पत्ति संस्कृत शब्द "जिन" से हुई है, जिसका अर्थ है स्वयं और बाहरी दुनिया पर विजय प्राप्त करना। जैन धर्म दुनिया के सबसे पुराने जीवित धर्मों में से एक है। जैन धर्म 24 तीर्थंकरों को खुद के लिए आधार बनाता है।
- एक 'तीर्थंकर', वह है जिसने अलग–अलग समय पर धार्मिक सत्य प्रकट किया।

क्या आप जानते हैं?

- ★ जैन मान्यता के अनुसार एक तीर्थंकर को एक तीर्थ के संस्थापक के रूप में परिभाषित किया गया है।
- ★ प्रथम तीर्थंकर ऋषभ और अंतिम तीर्थंकर महावीर थे। जैन धर्म के 23वें तीर्थंकर पार्श्वनाथ थे। जिनका जन्म 872 ई. पू. में वाराणसी में एक क्षत्रिय कुल में हुआ था।

- छठी शताब्दी ईसा पूर्व (बीसीई) के दौरान जैन धर्म को महावीर के तत्वावधान में प्रमुखता मिली।
- जैनों के अंतिम और 24वें तीर्थंकर वर्धमान महावीर थे।
- ऋषभनाथ का निर्वाण स्थल अष्टापद है। तीर्थंकर नेमिनाथ का निर्वाण का स्थल ऊर्जयन्त है। तीर्थंकर महावीर का निर्वाण स्थल पावापुरी है। वासुपूज्य 12वें तीर्थंकर हैं इनका निर्वाण स्थल चम्पापुरी है।
- जैन धर्म के तीर्थंकर तथा उनके चिह्न–

  आदिनाथ — वृषभ
  मल्लिनाथ — जल–कलश
  पार्श्वनाथ — सर्प
  सम्भवनाथ — अश्व
- वर्धमान महावीर का जन्म 599 ईसा पूर्व (बीसीई) में वैशाली के पास कुंडाग्राम में हुआ था। उनकी माता लिच्छवी राजकुमारी त्रिशला थीं। उन्होंने अपना प्रारंभिक जीवन एक राजकुमार के रूप में बिताया और उनका विवाह यशोदा नामक राजकुमारी से हुआ। इस दंपति की एक बेटी हुई थी।
- तीस वर्ष की आयु में उन्होंने अपना घर छोड़ दिया और एक तपस्वी बन गए। बारह वर्षों से अधिक समय तक, महावीर एक स्थान से दूसरे स्थान पर घूमते रहे, उन्होंने स्वयं को घोर तपस्या और आत्म–वैराग्य के अधीन किया।
- वह लिच्छवियों का एक क्षत्रिय राजकुमार था, एक समूह जो वज्जी संघ का हिस्सा था। 30 वर्ष की आयु में वे घर छोड़कर जंगल में रहने चले गए
- बारह वर्षों से अधिक समय तक, महावीर एक स्थान से दूसरे स्थान पर घूमते रहे, उन्होंने स्वयं को घोर तपस्या और आत्म–वैराग्य के अधीन किया।
- अपनी तपस्या के तेरहवें वर्ष में, उन्होंने उच्चतम ज्ञान या सर्वज्ञता (सब कुछ जानने या असीम रूप से बुद्धिमान होने की क्षमता) या सर्वोच्च ज्ञान प्राप्त किया और जिन (विजेता), महावीर (महान नायक) और केवला के रूप में जाना जाने लगे। तत्पश्चात्, वह जिना बन गयो जिसका अर्थ है 'सांसारिक सुख और आसक्ति पर विजय प्राप्त करने वाला'।
- उन्होंने एक सरल सिद्धांत दिया जो पुरुष और महिलाएं ज्ञान प्राप्त करना चाहते हैं, उन्हें अपना घर छोड़ देना चाहिए। उन्हें अहिंसा के नियमों का बहुत सख्ती से पालन करना चाहिए, जिसका अर्थ है जीवित प्राणियों को चोट पहुँचाना या मारना नहीं चाहिए।
- महावीर के अनुयायी, जो जैन कहलाते थे, बहुत सादा जीवन व्यतीत करते थे।
- महावीर ने मगध, विदेह और अंग के राज्यों में प्रचारक के रूप में बड़े पैमाने पर यात्रा की। मगध शासक बिंबिसार और अजातशत्रु उनकी शिक्षाओं से बहुत प्रभावित थे।
- 30 साल के उपदेश के बाद, महावीर की 72 साल की उम्र में 527 ईसा पूर्व (बीसीई) में पावापुरी में मृत्यु हो गई।
- **त्रि–रत्न या तीन रत्न:** महावीर ने मोक्ष की प्राप्ति (जन्म और मृत्यु के चक्र से मुक्ति) और कर्म से मुक्ति के लिए तीन गुना मार्ग का उपदेश दिया। वे हैं:
  - **सही विश्वास (सम्यक दर्शन):** महावीर की शिक्षाओं में विश्वास।
  - **सही ज्ञान (सम्यक ज्ञान):** महावीर की शिक्षाओं और ज्ञान में विश्वास।
  - **सही कार्य (सम्यक चरित्र):** यह महावीर के पाँच महान व्रतों यानी अहिंसा, ईमानदारी, दया, सच्चाई और दूसरों से संबंधित चीजों की लालसा या इच्छा नहीं करने के पालन को संदर्भित करता है।
- **जैन आचार संहिता / जैन धर्म के पाँच सिद्धांत:** महावीर ने अपने अनुयायियों से सदाचारी जीवन जीने को कहा। स्वस्थ नैतिकता से भरा जीवन जीने के लिए उन्होंने पाँच प्रमुख सिद्धांतों का पालन करने का उपदेश दिया। वे हैं:
  - **अहिंसा** – किसी जीव को हानि न पहुँचाना
  - **सत्य** – सत्य बोलना
  - **अस्तेय** – चोरी न करना
  - **अपरिग्रह** – संपत्ति को स्वीकार न करना
  - **ब्रह्मचर्य** – ब्रह्मचर्य
- **जैन धर्म के संप्रदाय/पद्धति:** जैन धर्म को दो प्रमुख संप्रदायों में विभाजित किया गया है; दिगंबर और श्वेतांबर। विभाजन मुख्य रूप से मगध में अकाल के कारण हुआ जिसने भद्रबाहु के नेतृत्व वाले एक समूह को दक्षिण भारत जाने के लिए मजबूर किया।
- 12 वर्षों के अकाल के दौरान, दक्षिण भारत में समूह सख्त प्रथाओं पर

अड़ा रहा, जबकि मगध में समूह ने अधिक लचीला रवैया अपनाया और सफेद कपड़े पहनना शुरू कर दिया।

- अकाल की समाप्ति के बाद, जब दक्षिणी समूह मगध में वापस आया, तो परिवर्तित प्रथाओं ने जैन धर्म को दो संप्रदायों में विभाजित कर दिया।
  - **दिगंबर:** इस संप्रदाय के साधु पूर्ण नग्नता में विश्वास करते हैं। पुरुष साधु कपड़े नहीं पहनते हैं जबकि महिला भिक्षु बिना सिले सादी सफेद साड़ी पहनती हैं। सभी पाँच व्रतों (सत्य, अहिंसा, अस्तेय, अपरिग्रह और ब्रह्मचर्य) का पालन करें। माना कि स्त्री मुक्ति प्राप्त नहीं कर सकती। भद्रबाहु इस संप्रदाय के प्रतिपादक थे।
  - **श्वेतांबर:** साधु सफेद वस्त्र पहनते हैं। केवल 4 व्रतों का पालन करें (ब्रह्मचर्य को छोड़कर)। विश्वास करें कि महिलाएं मुक्ति प्राप्त कर सकती हैं। स्थूलभद्र इस संप्रदाय के प्रतिपादक थे।
- भारत में जैन धर्म की व्यापक स्वीकृति के निम्नलिखित प्रमुख कारण हैं:
  - लोकभाषा का प्रयोग।
  - बोधगम्य उपदेश।
  - शासकों और व्यापारियों का समर्थन।
  - जैन मुनियों की दृढ़ता।
- **जैन परिषद:**
  - **प्रथम जैन परिषद:**
    - यह तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व में पाटलिपुत्र में आयोजित किया गया था और इसकी अध्यक्षता स्थूलभद्र ने की थी।
    - पूर्वों के स्थान पर 12 अंगों का संकलन किया गया था।
  - **दूसरी जैन परिषद:**
    - यह 512 ईस्वी में वल्लभी (गुजरात) में आयोजित किया गया था और इसकी अध्यक्षता देवर्धि क्षमाश्रमण ने की थी।
    - इसने 12 अंग और 12 उपांगों के अंतिम रूप से संकलित किया गया था।
- **जैन धर्म का पतन:** शाही संरक्षण की कमी, इसकी गंभीरता, गुटबाजी और बौद्ध धर्म के प्रसार के कारण भारत में जैन धर्म का पतन हुआ।
- **बौद्ध धर्म:** गौतम बुद्ध वर्तमान नेपाल में कपिलवस्तु के शाक्यों के एक क्षत्रिय कबीले के प्रमुख शुद्धोदन के पुत्र थे। उनका बचपन का नाम सिद्धार्थ था। चूंकि वे शाक्य वंश के थे, इसलिए उन्हें 'शाक्य मुनि' के नाम से भी जाना जाता था।
- गौतम बुद्ध का जन्म 540 ईसा पूर्व में कपिलवस्तु के पास लुंबिनी गार्डन में हुआ था। उनकी माता, मायादेवी (महामाया) का उनके जन्म के कुछ दिनों के बाद निधन हो गया और उनका पालन–पोषण उनकी सौतेली माँ गौतमी ने किया। सांसारिक मामलों की ओर उनका ध्यान हटाने के लिए, उनके पिता ने सोलह वर्ष की आयु में उनकी शादी यशोधरा नामक राजकुमारी से कर दी। उन्होंने कुछ समय के लिए एक सुखी वैवाहिक जीवन व्यतीत किया और राहुल नाम का एक पुत्र हुआ।
- पारिवारिक जीवन के दौरान से ही गौतम बुद्ध कई वर्षों तक भटकते रहे, अन्य विचारकों से मिलते रहे और विचार–विमर्श करते रहे
- वे "फोर ग्रेट साइट्स" के बाद तपस्वी बन गए। चार महान दृश्य 29 वर्ष की आयु में, सिद्धार्थ ने चार दुःखद दृश्य देखे। वह थे:
  - एक बेपरवाह बूढ़ा जिसने चिथड़े, पहन रखे हैं अपनी झुकी हुई पीठ के साथ।
  - एक बीमार आदमी एक लाइलाज बीमारी से पीड़ित है।
  - एक मृत आदमी को उसके परिजन रोते बिलखते श्मशान घाट में ले जा रहे हैं।
  - एक तपस्वी
- सिद्धार्थ इन स्थलों से गहराई से हिल गए थे। उन्होंने एक तपस्वी को भी देखा जिसने संसार को त्याग दिया था और दुःख का कोई निशान नहीं पाया। इन 'चार महान स्थलों' ने उन्हें दुनिया को त्यागने और दुख के कारण की खोज करने के लिए प्रेरित किया।
- 512 ईसा पूर्व में, वह अपना महल छोड़कर सत्य की खोज में जंगल में चले गये। अपने भटकने के दौरान, वह कई दिनों तक एक पीपल के पेड़ के नीचे बैठे रहे जब तक कि उन्हें ज्ञान की प्राप्ति नहीं हो गई।
- माना जाता है कि गौतम बुद्ध ने अंतिम अनुभूति के लिए बोधगया जाने से पहले छः साल तक डुंगेश्वरी गुफा नामक स्थान पर पवित्रतापूर्वक ध्यान किया।
- जिस स्थान पर उन्होंने ज्ञान प्राप्त किया, महाबोधि मंदिर, बोधगया (बिहार) में आज भी मौजूद है। अपने ज्ञानोदय के बाद, बुद्ध ने लोगों को अपना ज्ञान प्रदान करने का निर्णय लिया।
- वे वाराणसी गए और वहाँ अपना पहला उपदेश सारनाथ में दिया। उन्होंने मगध और कोसल के राज्यों में प्रचार किया। बड़ी संख्या में लोग उनके अपने परिवार सहित उनके अनुयायी बन गए। पैंतालीस वर्षों के उपदेश के बाद, उन्होंने अस्सी वर्ष की आयु में कुशीनगर (उत्तर प्रदेश में गोरखपुर के पास) में 483 ईसा पूर्व (बीसीई) में अंतिम सांस ली।
- वैशाली नामक बौद्ध स्थल पर सर्वप्रथम महिलाओं को संघ में शामिल किया गया। गौतम बुद्ध पहले महिलाओं को संघ में शामिल करने के पक्ष में नहीं थे लेकिन आनंद के कहने पर उन्होंने ऐसा किया।
- **बुद्ध के चार आर्य सत्य**
  - **दुख (पीड़ा का सच):** बौद्ध धर्म के अनुसार, सब कुछ दुख है (सब्बम दुखम)। यह दर्द का अनुभव करने की क्षमता को संदर्भित करता है न कि केवल एक व्यक्ति द्वारा अनुभव किए गए वास्तविक दर्द और दुःख को।
  - **समुदाय (दुख के कारण):** तृष्णा (इच्छा) दुख का मुख्य कारण है। हर दुख का एक कारण होता है और यह जीवन का एक हिस्सा और पार्सल है।
  - **निरोध (दुःख के अंत) :** निर्वाण की प्राप्ति से पीड़ा/दुःख का अंत हो सकता है।
  - **अष्टांगिक–मार्ग (दुख के अंत की ओर ले जाने वाले मार्ग):** दुख का अंत अष्टांगिक मार्ग में निहित है।
- **आठ गुना पथ:** इसमें ज्ञान, आचरण और ध्यान प्रथाओं से संबंधित विभिन्न परस्पर क्रियाएं शामिल हैं।
  - सम्यक दृश्य (सम्मा दित्ती)
  - सम्यक इरादा (सम्मा संगकप्पा)
  - सम्यक भाषण (सम्मा वेक्का)
  - सम्यक कार्रवाई (सम्मा कम्मंता)
  - सम्यक आजीविका (सम्मा अजिवा)
  - सम्यक सचेतनता (सम्मा सती)
  - सम्यक प्रयास (सम व्यायाम)
  - सम्यक एकाग्रता (सम्मा समाधि)

- **जीवन का पहिया:** यह दुनिया के बौद्ध दृष्टिकोण का प्रतिनिधित्व करता है।
- **बौद्ध संघ:** बुद्ध ने संघ नामक एक मिशनरी संगठन की नींव रखी, जिसका अर्थ है उनके विश्वास के प्रचार के लिए 'संगठन'। सदस्यों को भिक्खु (भिक्षु) कहा जाता था। वे तपस्या का जीवन व्यतीत करते थे।

क्या आप जानते हैं?

- ★ **चैत्य** – एक बौद्ध मंदिर या एक ध्यान कक्ष।
- ★ **विहार** – मठ/भिक्षुओं के रहने के स्थान।
- ★ **स्तूप** – बुद्ध के शरीर के अवशेषों पर निर्मित, वे महान कलात्मक मूल्य के स्मारक।

- **बौद्ध धर्म में विभाजन:** कनिष्क के शासनकाल के दौरान, बौद्ध भिक्षु नागार्जुन ने बौद्ध धर्म के पालन के तरीके में सुधारों की शुरुआत की। परिणामस्वरूप, बौद्ध धर्म हीनयान और महायान के रूप में दो भागों में विभाजित हो गया।
  - **हीनयान (कम वाहन):** यह बुद्ध द्वारा प्रचारित मूल पंथ था। इस रूप के अनुयायी बुद्ध को अपना गुरु मानते थे और उन्हें भगवान के रूप में नहीं पूजते थे। उन्होंने मूर्ति पूजा से इनकार किया और लोगों की भाषा पाली को जारी रखा।
  - **महायान (बड़ा वाहन):** इस संप्रदाय में, बुद्ध को भगवान और बोधिसत्व को उनके पिछले अवतार के रूप में पूजा जाता था। अनुयायियों ने बुद्ध और बोधिसत्व के चित्र और मूर्तियाँ बनाईं और प्रार्थनाएँ कीं, और उनकी स्तुति में भजनों (मंत्रों) का पाठ किया। बाद में, उन्होंने अपनी धार्मिक पुस्तकें संस्कृत में लिखीं। बौद्ध धर्म के इस रूप को कनिष्क ने संरक्षण दिया था।
- **थेरवाद:** यह आज के बौद्ध धर्म की सबसे प्राचीन शाखा है। यह बुद्ध की मूल शिक्षाओं के सबसे करीब है। थेरवाद बौद्ध धर्म श्रीलंका में विकसित हुआ और बाद में दक्षिण पूर्व एशिया के बाकी हिस्सों में फैल गया। यह कंबोडिया, लाओस, म्यांमार, श्रीलंका और थाईलैंड में धर्म का प्रमुख रूप है।
- **वज्रयान:** वज्रयान का अर्थ है "वज्र का वाहन", जिसे तांत्रिक बौद्ध धर्म के रूप में भी जाना जाता है। यह बौद्ध स्कूल भारत में लगभग 900 CE के आसपास विकसित हुआ। यह बाकी बौद्ध स्कूलों की तुलना में गूढ़ तत्वों और अनुष्ठानों के एक बहुत ही जटिल समुच्चय/प्रक्रिया पर आधारित है।
- **जेन:** यह महायान बौद्ध धर्म का एक स्कूल है जो चीन में तांग राजवंश के दौरान चीनी बौद्ध धर्म के चौन स्कूल के रूप में उत्पन्न हुआ और बाद में विभिन्न स्कूलों में विकसित हुआ। यह 7वीं शताब्दी में जापान में फैल गया। ध्यान और तंत्र इस बौद्ध परंपरा की सबसे विशिष्ट विशेषताएँ हैं।
- **बौद्ध धर्म के प्रसार के कारण:**
  - स्थानीय भाषा में बुद्ध के उपदेशों की सरलता ने लोगों को आकर्षित किया।
  - बौद्ध धर्म ने व्यापक धार्मिक रीति–रिवाजों को खारिज कर दिया जबकि रूढ़िवादी वैदिक धर्म के अभ्यास ने महंगे कर्मकांडों और बलिदानों पर जोर दिया।
  - बुद्ध का जोर धम्म के पालन पर था। इस कारण बौद्ध संघों ने बुद्ध के संदेशों के प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

बौद्ध परिषदें

आयोजन	जगह	अध्यक्ष	संरक्षक राजा
पहली	राजगृह	महाकस्सप	अजातशत्रु
दूसरी	वैशाली	साबकमीरा/ सबाकामी	कालाशोक
तीसरी	पाटलिपुत्र	भोगाली पुत्ततिस	अशोक
चौथी	कश्मीर	वसुमित्र	कनिष्क

- **त्रिपिटक:** विनयपिटक में भिक्षुओं और भिक्षुणियों के मठवासी जीवन पर लागू होने वाले आचरण और अनुशासन के नियम शामिल हैं।
- सुत्तपिटक में बुद्ध के मुख्य शिक्षण या धम्म शामिल हैं। इसे पाँच निकायों या संग्रहों में विभाजित किया गया है :
  - दीर्घ निकाय
  - मज्जिम निकाय
  - संयुक्त निकाय
  - अंगुत्तार निकाय
  - खुद्दक निकाय
- अभिधम्म पिटक भिक्षुओं के शिक्षण और विद्वतापूर्ण गतिविधियों का एक दार्शनिक विश्लेषण है।

क्या आप जानते हैं?

- ★ उपसाक पिटक के अलावा अभिधम्म सुत्त और विनय पिटक बौद्ध ग्रन्थ हैं जिन्हें पालि भाषा में लिखा गया है।

- अन्य महत्वपूर्ण बौद्ध ग्रंथों में दिव्यावदान, दीपवंश, महावंश, मिलिंद पन्हे आदि शामिल हैं।
- वंशपाकसिनी भारत में लिखा गया अंतिम बौद्ध ग्रन्थ था। इससे हमें मौर्यो की उत्पत्ति के बारे में जानकारी मिलती है।
- सिलप्पादिकारम और मणिमेकलई बौद्ध धर्म से संबंधित पुस्तकें हैं, जो तमिल साहित्य में पाई जाती हैं। ये एक बौद्ध भिक्षु इलंगो आदिगल द्वारा लिखी गई हैं।
- 'पेंरुगदायी कोंगु बेलिर द्वारा लिखित महाकाव्य कृति है। यह भारत के तमिल साहित्य से सम्बन्धित है। यह संगम काल की रचना है, इसमें कोंगु क्षेत्र का वर्णन मिलता है, जिसके नियंत्रण के लिए इस काल की तीनों शक्तियाँ चेर, चोल, पाण्डेय निरन्तर प्रयासरत रहती थीं।

मौर्य काल (322 ईसा पूर्व–185 ईसा पूर्व)

- **राजधानी:** पाटलिपुत्र (वर्तमान पटना, बिहार)
- **सरकार:** राजतंत्र
- **ऐतिहासिक युग:** सी। 322 ईसा पूर्व (बीसीई) 187 ईसा पूर्व (बीसीई)
- **महत्वपूर्ण राजा:** चंद्रगुप्त, बिन्दुसार, अशोक
- **मौर्य शासक**
  - **चंद्रगुप्त मौर्य:** मौर्य साम्राज्य भारत का पहला सबसे बड़ा साम्राज्य था। चन्द्रगुप्त मौर्य ने मगध में साम्राज्य की स्थापना की।
  - विष्णुगुप्त, जिन्हें बाद में चाणक्य या कौटिल्य के नाम से जाना गया, नंद राजा से अपमानित हुए थे। नदों को समूल नष्ट करने की कसम खाई। चंद्रगुप्त, शायद मैसेडोनिया के सिकंदर से प्रेरित होकर, एक सेना खड़ी कर रहा था और अपना खुद का राज्य स्थापित करने के अवसरों की तलाश कर रहा था।
  - सिकन्दर की मृत्यु का समाचार सुनकर चन्द्रगुप्त ने लोगों को इकट्ठा किया और उनकी सहायता से यूनानी सेना को खदेड़

दिया जिसे सिकन्दर ने तक्षशिला में छोड़ा था। फिर उन्होंने और उनके सहयोगियों ने पाटलिपुत्र की ओर कूच किया और 322 ईसा पूर्व (बीसीई) में नंद राजा को हराया। इस प्रकार मौर्य वंश की स्थापना हुई।

- चंद्रगुप्त के शासनकाल के दौरान, सिकंदर के सेनापति सेल्यूकस, जिनका एशिया माइनर से लेकर भारत तक के देशों पर नियंत्रण था, ने सिंधु को पार किया परन्तु चंद्रगुप्त से हार गया। कहा जाता है कि सेल्यूकस के दूत, मेगस्थनीज, भारत में बना रहा और इंडिका नामक उसका ग्रंथ मौर्य राजनीति और समाज के बारे में एक उपयोगी रिकॉर्ड है।

- गंगा के मैदान पर नियंत्रण पाने के बाद, चंद्रगुप्त ने अपना ध्यान उत्तर–पश्चिम की ओर लगाया ताकि सिकंदर के निधन से उत्पन्न शून्यता का लाभ उठाया जा सके। इन क्षेत्रों में वर्तमान अफगानिस्तान, बलूचिस्तान और मकरान शामिल थे, जिन्होंने बिना किसी प्रतिरोध के आत्मसमर्पण कर दिया। तत्पश्चात चंद्रगुप्त न मध्य भारत की ओर अभियान शुरू किया।
  - भद्रबाहु, एक जैन भिक्षु, चंद्रगुप्त मौर्य को दक्षिण भारत ले गए। चंद्रगुप्त ने श्रवणबेलगोला (कर्नाटक) में साललेखन (जैन अनुष्ठान जिसमें एक व्यक्ति अपनी मृत्यु तक उपवास करता है) विधि से अपने प्राण त्याग दिए।
  - **बिन्दुसार :** उनका वास्तविक नाम सिहासेना था। वह चंद्रगुप्त मौर्य के पुत्र था। ग्रीक विद्वानों द्वारा उसे अमित्रोचेट्स (दुश्मनों का नाश करने वाला) के रूप में उल्लेखित किया है, जबकि महाभाष्य उन्हें अमित्रघात (शत्रुनाशक) के रूप में संदर्भित करता है।
  - बिंदुसार स्पष्ट रूप से एक सक्षम शासक था जिससे पश्चिम एशिया के ग्रीक राज्यों के साथ घनिष्ठ संपर्क की अपने पिता की परंपरा को जारी रखा। ऐसा माना जाता है कि उसने दो समुद्रों यानी अरब सागर और बंगाल की खाड़ी के बीच की भूमि पर विजय प्राप्त की थी। उन्हें चाणक्य और अन्य सक्षम मंत्रियों द्वारा सलाह दी जाती रही। ऐसा माना जाता है कि बिंदुसार अजीविका संप्रदाय में दीसित हो गया था।
  - उसने अपने पुत्रों को साम्राज्य के विभिन्न प्रांतों के वाइसराय के रूप में नियुक्त किया था। बिन्दुसार ने 25 वर्षों तक शासन किया, और उनकी मृत्यु 272 ईसा पूर्व में हुई थी। अशोक बिन्दुसार चुना हुआ उत्तराधिकारी नहीं था, और तथ्य यह है कि वह केवल चार साल बाद 268 ईसा पूर्व में सिंहासन पर आ रहा हुआ था, यह दर्शाता है कि उत्तराधिकार के लिए बिन्दुसार के पुत्रों के बीच संघर्ष हुआ होगा।
  - अपने शासन के दौरान, बिन्दुसार कर्नाटक तक मौर्य साम्राज्य का विस्तार करने में सफल रहा। उसकी मृत्यु के समय, उपमहाद्वीप का एक बड़ा हिस्सा मौर्य आधिपत्य के अधीन आ गया था। उसने अपने पुत्र अशोक को उज्जैन का राज्यपाल नियुक्त किया। उसकी मृत्यु के बाद, अशोक मगध के सिंहासन पर बैठा।
  - **अशोक:** अशोक, चौथी शताब्दी ई.पू. में अपने दादा चंद्रगुप्त मौर्य द्वारा स्थापित साम्राज्य के सबसे महान और शासकों में से एक थे। उन्हें राधागुप्त नामक एक बुद्धिमान व्यक्ति (प्रधानमंत्री) का समर्थन प्राप्त था।
  - चाणक्य के कई विचार अर्थशास्त्र नामक पुस्तक में लिखे गए हैं। अशोक पहला शासक था जिसने शिलालेखों के माध्यम से अपना संदेश लोगों तक पहुंचाने का प्रयास किया। ये शिलालेख प्राकृत भाषा में थे और ब्राह्मी लिपि में लिखे गए थे।
  - उन्हें श्देवनाम प्रिय' के रूप में जाना जाता था जिसका अर्थ है 'देवताओं का प्रिय'। कलिंग तटीय उड़ीसा का प्राचीन नाम था। अशोक ने 261 ईसा पूर्व में कलिंग पर विजय प्राप्त करने के लिए युद्ध लड़ा था। जब उसने हिंसा और रक्तपात देखा तो वह द्रवित हो गया और इसलिए उसने और युद्ध न करने का निर्णय लिया।
  - अशोक के आक्रमण के दौरान कलिंग (पूर्वी प्रांत) की राजधानी तोशाली थी। इसका उल्लेख उसके 13वें शिलालेख में मिलता है। इसी युद्ध के बाद अशोक ने धम्म विजय की नीति अपनाई।
  - वह दुनिया के इतिहास में एकमात्र ऐसा राजा था जिसने युद्ध जीतने के बाद विजय प्राप्त करना छोड़ दिया। युद्ध की विभीषिका का वर्णन राजा ने स्वयं अपने शिलालेख XIII में किया है।
  - बिंदुसार चाहता था कि उसका पुत्र सुसीम उसका उत्तराधिकारी बने। राधागुप्त नामक एक मंत्री की सहायता से अशोक अपने 99 भाइयों को मारने के बाद, अशोक (बिंदुसार के पुत्र) ने सिंहासन हासिल किया।
  - तक्षशिला के लोगों द्वारा स्थानीय अधिकारियों के खिलाफ विद्रोह करने पर अशोक तक्षशिला का राज्यपाल (वायसराय) था, और बाद में एक प्रमुख शहर और वाणिज्यिक केंद्र अवंती की राजधानी उज्जैन का राज्यपाल (वाइसराय) नियुक्त किया गया था।
  - अशोक सभी समय के महानतम राजाओं में से एक था, और अपने शिलालेखों के माध्यम से अपने लोगों के साथ सीधा संपर्क बनाए रखने वाला पहला शासक माना जाता है। सम्राट के अन्य नामों में बुद्धशाक्य (मास्की शिलालेख में), धर्मसोक (सारनाथ शिलालेख), देवानामपिया (अर्थात् देवताओं के प्रिय) और पियदस्सी (मनभावन उपस्थिति का अर्थ) शामिल हैं, जो श्रीलंकाई बौद्ध कालक्रम दीपवंश और महावंश में दिए गए हैं।
  - अशोक के शासनकाल के दौरान, मौर्य साम्राज्य ने हिंदुकुश से लेकर बंगाल तक पूरे क्षेत्र में विस्तार किया, और अफगानिस्तान, बलूचिस्तान और पूरे भारत में कश्मीर और नेपाल की घाटियों सहित, सुदूर दक्षिण में एक छोटे से हिस्से को छोड़कर, जिस पर चोलों और रॉक शिलालेख 13 के अनुसार पांड्य और रॉक शिलालेख 2 के अनुसार केरलपुत्रों और सत्यपुत्रों द्वारा शासित था।
  - उसने सीरिया, मिस्र, मैसेडोनिया, साइरेनिका (लीबिया) और एपिरस के अपने समकालीनों शासकों के साथ राजनयिक संबंध स्थापित किए, इन सभी का उल्लेख अशोक के शिलालेखों में किया गया है।
  - अशोक के शासन की परिभाषित घटना उसके शासनकाल के आठवें वर्ष में कलिंग (वर्तमान ओडिशा) के खिलाफ उसका अभियान था। यह मौर्यों का एकमात्र दर्ज सैन्य अभियान था।
  - युद्ध में मारे गए और निर्वासित किये गये, लोगों की संख्या हजारों में थी।
  - अभियान शायद सामान्य से अधिक क्रूर था क्योंकि यह कलिंग के खिलाफ एक दंडात्मक कार्यवाही थी, जो सम्भवतः बिन्दुसार के समय में मगध साम्राज्य से अलग हो गया था (हाथीगुम्फा शिलालेख कलिंग को नंद साम्राज्य के एक हिस्से के रूप में बताता है)।
  - अशोक नरसंहार से इतना तबाह हो गया था और पीड़ा से हिल गया था कि जिसने उसके दृष्टिकोण और मूल्यों को बदल दिया।
  - अशोक अपने आध्यात्मिक गुरु उपगुप्त से बेहद प्रभावित थे उन्हीं के प्रभाव में आकर वह बौद्ध बन गए और उनके नए-नए मूल्यों और विश्वासों की एक परम्परा को अपना लिया, जो शांति और

नैतिक धार्मिकता या धम्म (संस्कृत में धर्म) के लिए उनके जुनून की पुष्टि करते हैं।

- **अशोक के शिलालेख:** जेम्स प्रिंसेप, एक ब्रिटिश तत्वशास्त्री और औपनिवेशिक प्रशासक अशोक के शिलालेखों को समझने वाले पहले व्यक्ति थे। अशोक के ये अभिलेख बौद्ध धर्म के प्रथम मूर्त प्रमाण हैं।
- **लघु शिलालेख** अशोक के जिला लेखों के अवल उसके अशोक के जिला लेखों के अलव उसके देश भर में और अफगानिस्तान में भी 15 चट्टानों पर पाए जाते हैं। अशोक अपने नाम का प्रयोग इनमें से केवल चार स्थानों पर करता है–
  - मस्की,
  - ब्रह्मगिरी (कर्नाटक),
  - गुर्जरा (मध्य प्रदेश) और
  - नेट्टूर (आंध्र प्रदेश)
- **स्तंभ शिलालेख:** सभी स्तंभ मोनोलिथ (पत्थर से उकेरे गए) हैं और सतह अच्छी तरह से पॉलिश की गई है। वे कंधार (अफगानिस्तान), खैबर पख्तूनख्वा (पाकिस्तान), दिल्ली, वैशाली और चंपारण (बिहार), सारनाथ और इलाहाबाद (उत्तर प्रदेश), अमरावती (आंध्र प्रदेश), और सांची (मध्य प्रदेश) जैसे विभिन्न स्थानों से पाए गए हैं।
- **चंद्रशोक (अशोक, दुष्ट) से धर्मसोका (अशोक धर्मी):** कलिंग की लड़ाई के बाद, उपगुप्त के प्रभाव में आकर अशोक बौद्ध बन गया। उसने धम्म की नीति पर लोगों को निर्देश देते हुए देश के विभिन्न भागों में दौरे (धर्मसूत्र) किए।
- **अशोक का धम्म:** 'धम्म' संस्कृत शब्द :धर्म' के लिए प्राकृत शब्द है। अशोक के स्तंभ शिलालेख II में धम्म का अर्थ समझाया गया है। धम्म में किसी देवता की पूजा, या यज्ञ का प्रदर्शन शामिल नहीं था। अशोक अपना कर्तव्य समझता था कि वह अपनी प्रजा को निर्देश दे और वह बुद्ध की शिक्षाओं का प्रसार करे।
- अशोक के धम्म में मानवतावाद के महानतम विचार निहित थे, जो सभी धर्मों का सार था। उन्होंने करुणा, दान, पवित्रता, साधुता, संयम, सत्यवादिता, आज्ञाकारिता और माता–पिता, गुरुओं और बड़ों के प्रति सम्मान पर जोर दिया।
- जो भिक्षु धम्म के बारे में पढ़ाने के लिए जगह–जगह जाते थे। उन्हें धम्म महामात्त कहा जाता था। अशोक ने बौद्ध धर्म के प्रचार के लिए अपने पुत्र महिंद और पुत्री संघमित्रा को श्रीलंका भेजा था। अशोक ने धम्म के संदेश को फैलाने के लिए धम्ममहाभात्त को पश्चिम एशिया, मिस्र और पूर्वी यूरोप में भी भेजा।
- अशोक ने बौद्ध धर्म में आस्था प्रकट करते हुए अपनी राजधानी पाटलिपुत्र में तीसरी बौद्ध संगीति का आयोजन करवाया था।

क्या आप जानते हैं?

- **अशोक का सिंह शीर्ष:** भारतीय गणराज्य का प्रतीक सारनाथ में स्थित अशोक के स्तंभों में से एक के सिंह शीर्ष से अपनाया गया है। वृत्ताकार आधार से निकला पहिया, अशोक चक्र राष्ट्रीय ध्वज का एक भाग है।

गुप्त वंश

- गुप्त साम्राज्य की स्थापना श्री गुप्त ने की थी और उसका उत्तराधिकारी उनके पुत्र घटोत्कच था। यह राजवंश चंद्रगुप्त–प्रथम, और समुद्रगुप्त आदि जैसे शासकों के साथ प्रसिद्ध हुआ। कुछ महत्वपूर्ण गुप्त साम्राज्य के राजाओं का विवरण नीचे दिया गया है–
  - **श्री गुप्त:** गुप्त वंश के संस्थापक श्री गुप्त था। वह अपने घटोत्कच पुत्र के कारण स्वतंत्र होने में सफल हुआ था। इन दोनों को महाराज कहा जाता था।
  - **चंद्रगुप्त प्रथम (320 – 330 ईस्वी):** चंद्रगुप्त प्रथम, वह महाराजाधिराज (राजाओं के महान राजा) कहलाने वाले पहले व्यक्ति थे। उन्होंने लिच्छवियों के साथ वैवाहिक सम्बन्ध स्थापित करके अपनी स्थिति मजबूत कर ली। उन्होंने उस परिवार की राजकुमारी कुमारदेवी से विवाह किया।
  - महरौली लौह स्तंभ अभिलेख में उसके व्यापक विजय अभियानों का उल्लेख है। चंद्रगुप्त प्रथम को गुप्त युग का संस्थापक माना जाता है जो 320 ईस्वी में उसके राज्यारोहण के साथ शुरू होता है।
  - **समुद्रगुप्त (330–380 ई.):** समुद्रगुप्त संभवतः गुप्त वंश के शासकों में सबसे महान था। इलाहाबाद स्तंभ के शिलालेख समुद्रगुप्त के शासनकाल का विस्तृत विवरण प्रदान करते हैं। समुद्रगुप्त ने दक्षिण भारतीय राजाओं के खिलाफ अभियान किया था।
  - समुद्रगुप्त की प्रशस्ति, संस्कृत में एक कविता के रूप में हरिषेण कवि द्वारा रचित थी। जिसे प्रयागराज (इलाहाबाद) के अशोक स्तंभ पर अंकित किया गया था।
  - प्रयाग प्रशस्ति को समुद्रगुप्त के शासनकाल के सबसे महत्वपूर्ण शिलालेखों में से एक माना जाता है तथा यह शिलालेख समुद्रगुप्त की विजयों, गुप्त साम्राज्य की शक्ति और विस्तार का वर्णन करता है।
  - प्रयाग प्रशस्ति को संस्कृत साहित्य की एक उत्कृष्ट कृति माना जाता है। यह कविता की सुंदरता और समुद्रगुप्त की प्रशंसा के लिए प्रसिद्ध है तथा इसमें दरबारी कवि हरिषेण ने समुद्रगुप्त को एक महान् योद्धा एक उदार शासक और एक विद्वान राजा के रूप में चित्रित किया है।
  - समुद्रगुप्त में अश्वमेध यज्ञ किया। समुद्रगुप्त ने सोने और चांदी के सिक्के जारी किए जिन पर 'अश्वमेध को पुनर्स्थापित करने वाले' की कथा अंकित थी। उनकी सैन्य उपलब्धियों के कारण समुद्रगुप्त को श्भारतीय नेपोलियन' के रूप में प्रतिष्ठित किया गया था।
  - **चंद्रगुप्त द्वितीय (380–415 ई.):** समुद्रगुप्त के बाद उसका पुत्र चंद्रगुप्त द्वितीय विक्रमादित्य उत्तराधिकारी बना। वैवाहिक गठबंधनों के माध्यम से, चंद्रगुप्त द्वितीय ने अपनी राजनीतिक शक्ति को मजबूत किया। चंद्रगुप्त द्वितीय ने कुबेरनागा से विवाह किया, वह मध्य भारत की एक नागा वंश की राजकुमारी थीं।
  - चंद्रगुप्त द्वितीय की सबसे बड़ी सैन्य उपलब्धि पश्चिमी भारत के शक क्षत्रपों के खिलाफ उसका युद्ध था। अपनी जीत के बाद, उसने घोड़े की बलि दी और सकारी की उपाधि धारण की, जिसका अर्थ है, 'शकों का नाश करने वाला'। वह अपने को 'विक्रमादित्य' भी कहता था।
  - उसके अन्य नाम देवगुप्त, देवराज तथा देवश्री और उपाधियाँ विक्रमांक और परमभागवत आदि थीं। मेहरौली लेख के अनुसार

Paper Pakka Fasega!

उसने विष्णुपद पर्वत पर विष्णु ध्वज की स्थापना कराई थी। उसे शक विजेता के रूप में भी जाना जाता है।

- उज्जैन एक महत्वपूर्ण व्यापारिक नगर था और गुप्तों की वैकल्पिक राजधानी था। गुप्त साम्राज्य की महान समृद्धि विभिन्न प्रकार के सोने के सिक्कों से प्रकट होती है। चन्द्रगुप्त द्वितीय के शासनकाल में प्रसिद्ध चीनी यात्री फाह्यान भारत आया था। फाहियान ने गुप्त साम्राज्य की धार्मिक, सामाजिक और आर्थिक स्थिति के बारे में बहुमूल्य जानकारी दी है।
- **कुमारगुप्त:** कुमारगुप्त चंद्रगुप्त द्वितीय का पुत्र और उत्तराधिकारी था। उसने कई सिक्के जारी किए और उसके शिलालेख पूरे गुप्त साम्राज्य में पाए गए हैं। कुमारगुप्त ने अश्वमेध यज्ञ भी किया था। कुमारगुप्त ने नालंदा विश्वविद्यालय की नींव रखी जो अंतर्राष्ट्रीय ख्याति के संस्थान के रूप में उभरा। 'पुष्यमित्र' नामक शक्तिशाली धनी जनजाति ने गुप्त सेना को उसके शासनकाल के अंत में हराया था।
- **स्कंदगुप्त:** मध्य एशिया के हूणों की एक शाखा ने हिंदू कुश पर्वतों को पार करने और भारत पर आक्रमण करने का प्रयास किया। स्कंदगुप्त जिसने वास्तव में हूणों के आक्रमण का सामना किया था। उसने हूणों के खिलाफ विजय प्राप्त की और साम्राज्य को बचाया तथा उन्हें भारत से बाहर खदेड़ दिया।
- नीतिसार (राजनीति के तत्व) जिसमें कौटिल्य के अर्थशास्त्र का प्रारंभिक मूल पाठ शामिल है, इसे कामन्दक के द्वारा लिखा गया था।

गुप्तोत्तर काल

- गुप्तों और वाकाटक शासकों के पतन के साथ राजनीतिक स्थिति जटिल हो गई। गुप्तों के सामंत उत्तर में स्वतंत्र हो गए। दक्कन और सुदूर दक्षिण में भी स्वतंत्र हुई शक्तियों की बहुलता देखी गई।
- गुप्तों के पतन से लेकर हर्ष के उदय तक भारत में राजनीतिक परिदृश्य विस्मयकारी था। कुछ समय तक बड़े पैमाने पर लोगों का विस्थापन होता रहा। गुप्तों की विरासत के लिए छोटे–छोटे राज्यों में आपस में होड़ मच गई। उत्तरी भारत को मगध के बाद के गुप्तों, मौखरियों, पुश्य भूतियों और मैत्रकों के चार राज्यों में विभाजित किया गया था। मौखरियों ने सर्वप्रथम कन्नौज के आसपास पश्चिमी उत्तर प्रदेश के क्षेत्र पर अधिकार किया। धीरे–धीरे उन्होंने बाद के गुप्तों को पराजित कर उन्हें मालवा में स्थानांतरित कर दिया।

शासक राजवंश

उत्तर भारत	दक्षिण भारत
मैत्रक	ईक्ष्वाकुओं
मौखरी	बादामी के चालुक्य
गौड़	कांची के पल्लव
हूणों	कदम्ब साम्राज्य
थानेसर के पुष्यभूति	कालभ्रस

- **पुष्यभूति वंश:** पुष्यभूति या वर्धन वंश की स्थापना थानेसर (कुरुक्षेत्र जिला) में पुष्यभूति द्वारा संभवतः 6वीं शताब्दी की शुरुआत में की गई थी। पुष्यभूति गुप्तों के सामंत थे, लेकिन हूणों के आक्रमणों के बाद वे स्वतंत्र हो गए।
- राजवंश का पहला महत्वपूर्ण शासक प्रभाकर वर्धन (580–605 ई.) था। प्रभाकर वर्धन ने अपने सबसे बड़े पुत्र राज्यवर्धन (605–606 ईस्वी) को उत्तराधिकारी बनाया गया था, राज्यवर्धन को 606 ईस्वी में शशांक द्वारा मार डाला गया था।
- हर्षवर्धन का जन्म 590 ई. में स्थानेश्वर (थानेसर, हरियाणा) के राजा प्रभाकर वर्धन के यहाँ हुआ था। वह पुष्यभूति से संबंधित था जिसे वर्धन वंश भी कहा जाता था। वह एक हिंदू थे जिन्होंने बाद में महायान बौद्ध धर्म ग्रहण किया। उनका विवाह दुर्गावती से हुआ था।
- उनकी एक बेटी और दो बेटे थे। उनकी बेटी ने वल्लभी के मैतक वंश के एक राजा से विवाह किया था, जबकि उनके बेटों को उनके ही मंत्री ने मार डाला। चीनी बौद्ध यात्री ह्वेनसांग ने अपने लेखन में राजा हर्षवर्धन के कार्यों की प्रशंसा की।
- प्रभाकर वर्धन की मृत्यु के बाद, उनका बड़ा पुत्र राज्यवर्धन थानेसर के सिंहासन पर बैठा। हर्ष की एक बहन थी, राज्यश्री जिसका विवाह कन्नौज के राजा ग्रहवर्मन से हुआ था। गौड़ शासक शशांक ने ग्रहवर्मन को मार डाला और राज्यश्री को बंदी बना लिया।
- इस घटना ने राज्यवर्धन को शशांक के खिलाफ लड़ने के लिए प्रेरित किया। लेकिन शशांक ने राज्यवर्धन को मार डाला। इसके बाद युद्ध के मैदान में ही 16 वर्षीय हर्षवर्धन को 606 ईस्वी में थानेसर की पर बैठने का अवसर मिला। उसने अपने भाई की हत्या का बदला लेने और अपनी बहन को बचाने की कसम खाई।
- इसके लिए उसने कामरूप के राजा भास्करवर्मन के साथ संधि की। हर्ष और भास्करवर्मन ने शशांक के खिलाफ अभियान किया। अंततः शशांक बंगाल भाग गया और हर्ष कन्नौज का भी राजा बना।
- **हर्ष का साम्राज्य:** कन्नौज को प्राप्त करने पर, हर्ष ने थानेसर और कन्नौज दो राज्यों को एकजुट किया। वह अपनी राजधानी कन्नौज ले गया। गुप्तों के पतन के बाद उत्तर भारत कई छोटे–छोटे राज्यों में बंट गया था। परन्तु हर्ष अपने नेतृत्व में उनमें से कई को एकजुट करने में सफल रहा।
- पंजाब और मध्य भारत पर उसका अधिकार था। शशांक की मृत्यु के बाद उसने बंगाल, बिहार और उड़ीसा पर अधिकार कर लिया। उन्होंने गुजरात के वल्लभी राजा को भी हराया। यद्यपि (हर्ष की बेटी और वल्लभी राजा ध्रुवभट्ट के बीच विवाह से वल्लभी राजा और हर्ष में समझौता हो गया और दोनों राज्यों में मित्रता हो गई।)
- हालाँकि, दक्षिण को जीतने की हर्ष की योजना अधूरी रह गई जब चालुक्य राजा, पुलकेशिन द्वितीय ने 618–619 ईसवी में हर्ष को हराया, इसने नर्मदा नदी के रूप में हर्ष की दक्षिणी क्षेत्रीय सीमा को सीमित कर दिया।
- यहां तक कि सामंत भी हर्ष के कड़े नियंत्रण में थे। हर्ष के शासनकाल ने भारत में सामंतवाद की शुरुआत को चिह्नित किया। ह्वेन त्सांग ने हर्ष के शासनकाल में भारत का दौरा किया था। उसने राजा हर्ष और उसके साम्राज्य का बहुत अनुकूल विवरण दिया है। वह उसकी उदारता और न्याय की प्रशंसा करता है।
- हर्ष कला का महान संरक्षक था। वे स्वयं एक सिद्धहस्त लेखक था। उन्हें संस्कृत कृतियों रत्नावली, प्रियदर्शिका और नागानंद को लेखन का श्रेय दिया जाता है। बाणभट्ट उसके दरबारी कवि थे उन्होंने हर्षचरित की रचना की जिसमें हर्ष के जीवन और कार्यों का लेखा–जोखा दिया गया है।

- हर्ष ने नालंदा विश्वविद्यालय को उदारतापूर्वक दान दिया। हर्ष ने एकत्र किए गए सभी करों का एक चौथाई दान और सांस्कृतिक उद्देश्यों के लिए उपयोग किया जाता था।
- हर्ष एक सक्षम सैन्य विजेता और एक सक्षम प्रशासक था। हर्ष मुसलमानों के आक्रमण से पहले भारत में एक विशाल साम्राज्य पर शासन करने वाला अंतिम राजा था।
- **हर्ष की मृत्यु :** हर्ष की मृत्यु 41 वर्ष तक शासन करने के बाद 647 ई. में हुई। चूंकि वह बिना किसी उत्तराधिकारी के मर गया, इसलिए उसकी मृत्यु के तुरंत बाद उसका साम्राज्य बिखर गया।

महत्वपूर्ण अभ्यास प्रश्न

1. महाभारत में वर्णित कुरुक्षेत्र की लड़ाई, कितने दिनों तक लड़ी गई थी ?
(A) 16 दिन (B) 18 दिन
(C) 20 दिन (D) 24 दिन

2. हड़प्पा स्थल की सर्वप्रथम संक्षिप्त खुदाई निम्नलिखित में से किसके द्वारा की गई थी?
(A) राखालदास बनर्जी
(B) बी.के. थापर
(C) सर अलेक्जेंडर कनिंघम
(D) अर्नेस्ट जे.एच. मैक

3. निम्नलिखित में से किस स्थान पर "पुजारी राजाओं" की मूर्ति मिली थी ?
(A) लोथल (B) मोहनजोदड़ो
(C) कोटदीजी (D) हड़प्पा

4. हड़प्पा सभ्यता के दौरान डांसिंग गर्ल (नर्तकी) की कांस्य प्रतिमा बनाने के लिए..... तकनीक का इस्तेमाल किया गया था।
(A) पत्थर की नक्काशी
(B) हाथीदांत नक्काशी
(C) लकड़ी की नक्काशी
(D) मोम लोपी ढलाई (कास्टिंग)

5. 6वीं से 14वीं शताब्दी तक निम्नलिखित में से कौन–सा सबसे शक्तिशाली महाजनपद था ?
(A) अंग (B) मगध
(C) वैशाली (D) वज्जि

6. जैन धर्म का सबसे महत्वपूर्ण मौलिक सिद्धान्त है :
(A) कर्म (B) अहिंसा
(C) वैराग्य (D) निष्ठा

7. वैदिक देवता इन्द्र किसके देवता हैं ?
(A) हवा के
(B) तूफान के
(C) वर्षा व चक्रवात के
(D) अग्नि के

8. भारत के राष्ट्रीय प्रतीक में एक वृत्ताकार अबेकस पर चार शेर एक के बाद एक जुड़े हुए हैं। अबेकस के चित्रवल्लरी में चार अलग-अलग जानवरों की मूर्तियाँ हैं, जिन्हें धर्म चक्रों के बीच से अलग किया गया है। निम्नलिखित में से कौन-सा जानवर अबेकस की चित्रवल्लरी का हिस्सा नहीं है?
(A) बाघ (B) बैल
(C) हाथी (D) दौड़ता हुआ घोड़ा

9. निम्नलिखित में से कौन वह व्यक्ति है जिनका नाम 'देवानामप्रिय पियदर्शी' भी था?
(A) मौर्य सम्राट चन्द्रगुप्त
(B) भगवान महावीर
(C) मौर्य सम्राट अशोक
(D) गौतम बुद्ध

10. चन्द्रगुप्त मौर्य के इस प्रसिद्ध राजनीतिक सलाहकार को निम्नलिखित सभी नामों से जाना जाता था, इसके अलावा:''
(A) चाणक्य (B) विष्णुगुप्त
(C) कौटिल्य (D) समुद्रगुप्त

11. सम्राट अशोक का कौन-सा शिलालेख कलिंग पर उनकी विजय का उल्लेख करता है ?
(A) प्रथम (B) चतुर्थ
(C) दसवें (D) तेरहवें

12. मौर्य अर्थव्यवस्था मुख्य रूप से ..... पर निर्भर थी।
(A) कृषि अर्थव्यवस्था
(B) व्यापार आधारित अर्थव्यवस्था
(C) उद्योग आधारित अर्थव्यवस्था
(D) युद्ध आधारित अर्थव्यवस्था

13. वृहद् साँची स्तूप किस काल से सम्बन्धित है?
(A) कुषाण काल
(B) गुप्त काल
(C) हर्षवर्धन काल
(D) मौर्य काल

14. कुषाण मूलतः कहाँ के निवासी थे ?
(A) मध्य एशिया (B) चीनी तुर्किस्तान
(C) तिब्बत (D) ईरान

15. कनिष्क के शासनकाल के दौरान निम्नलिखित में से कौन-सी बौद्ध संगीति आयोजित की गई थी ?
(A) पहली (B) दूसरी
(C) चौथी (D) पाँचवीं

16. शूद्रक द्वारा लिखित "मृच्छकटिकम्" का साहित्यिक प्रकार निम्नलिखित में से कौन–सा है ?
(A) निबंध (B) कविता
(C) टीका (D) नाटक

17. निम्नलिखित में से किस शासक के दरबार में बहुत से विद्वानों को 'नवरत्न' के रूप में अलंकृत किया गया था ?
(A) चन्द्रगुप्त II (B) इनमें से कोई नहीं
(C) श्रीगुप्त (D) समुद्रगुप्त

18. हर्षवर्धन ने '5 इंडीज' को अपने नियंत्रण में लिया। इनमें से कौन-सा '5 इंडीज' था ?
(A) पंजाब, कन्नौज, बंगाल, बिहार और जयपुर
(B) पंजाब, कन्नौज, बंगाल, बिहार और उड़ीसा
(C) पंजाब, कन्नौज, बंगाल, उत्तर प्रदेश और उड़ीसा
(D) राजस्थान, कन्नौज, बंगाल, बिहार और उड़ीसा

19. ''विजयनगर वास्तुकला द्रविड़ शैली का सबसे विकसित उदाहरण है।'' निम्नलिखित में से कौन-सा मंदिर विजयनगर स्थापत्य शैली का है?
(A) विरूपाक्ष मंदिर (B) तिरुपति मंदिर
(C) सोमनाथ मंदिर (D) मिनाक्षी मंदिर

20. जयचंद के विश्वासघात के कारण पृथ्वीराज चौहान की पराजय हुई। कालांतर में जयचंद कहाँ और कब मारा गया?
(A) तराई, 1192
(B) चंदावर, 1193
(C) कन्नौज, 1194
(D) उपर्युक्त में से कोई नहीं

उत्तरमाला

1. (B)	**2.** (C)	**3.** (B)	**4.** (D)	**5.** (B)
6. (B)	**7.** (C)	**8.** (A)	**9.** (C)	**10.** (D)
11. (D)	**12.** (A)	**13.** (D)	**14.** (A)	**15.** (C)
16. (D)	**17.** (A)	**18.** (B)	**19.** (A)	**20.** (B)

❑❑

Paper Pakka Fasega!